❖ वर्ष 49 ❖ अंक 10 ❖ अक्टूबर 2022

हँसती दुनिया

₹ 15/-

हँसती दुनिया

● वर्ष 49 ● अंक 10 ● अक्टूबर 2022 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009 हेतु एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया।

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 01127608215
E-mail : editorial@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

Available on Website

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
12. चित्रकथा
34. किट्टी
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया

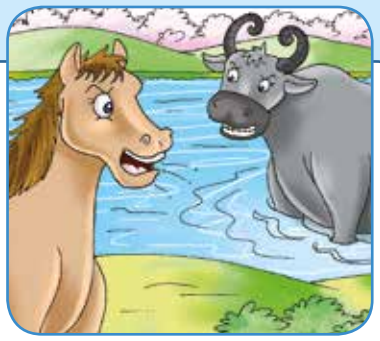

कविताएं

7. दशहरा
: राजेश निषाद

7. सच की जीत ...
: राजेन्द्र निशेश

17. सीख
: डॉ. परशुराम शुक्ल

17. अच्छी बातें
: महेन्द्र सिंह शेखावत

25. पंछी प्यारे
: अमृत हरमन

29. काम भलाई का
: अशोक आनन

29. फूलों की बस्ती
: गोविन्द भारद्वाज

41. पाठ पढ़ाते तारे?
: राहुल

41. किरण
: गोविन्द भारद्वाज

47. स्वच्छता अभियान
: डॉ. गोपालदास नायक

47. वृक्ष
: बलतेज कोमल

विशेष/लेख

10. ब्रह्माण्ड की बढ़ती उम्र ...
: जयेन्द्र

11. ऐसे हुआ एवरेस्ट ...
: विद्या प्रकाश

16. गाँधी जी की सार्थक बातें
: प्रभा

18. दृष्टिहीनों की लिपि...
: राधा नाचीज

18. विचित्र पौधा
: मिताली जैन

22. रंगीन संसार तितलियों का
: दीपांशु जैन

24. आकर्षक पक्षी हुदहुद
: उमेश प्रसाद सिंह

26. विज्ञान पहेलियां
: कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

31. जंगल के पशु-पक्षी भी ...
: कमल सौगानी

32. रोज खाएं सेब
: डॉ. ऋषि मोहन श्रीवास्तव

42. सफेद शेर
: परशुराम शुक्ल

कहानियां

8. कछुए का उपकार
: जय अहिरवार

21. परोपकार
: हरिन्दर सिंह गोगना

27. उपहार रानी तितली का
: पुष्पारघु

32. जब जानवर गुलाम हुआ
: विद्या प्रकाश

39. विनम्रता की ताकत
: दिनेश दर्पण

40. अनूठी गुरु दक्षिणा
: ऊषा सभरवाल

46. महान कौन?
: महेन्द्र सिंह शेखावत

46. महानता
: गौरीशंकर कुमार

चलें साथ-साथ

हम सभी जिन्दगी को अपने-अपने तरीके से जी रहे हैं। कोई इस जिन्दगी को जी रहा है और किसी से कोई मतलब ही नहीं हैं। कोई जिन्दगी को एक जंग मानता है और कोई इस जिन्दगी को पाकर सबको हराना चाहता है। इस तरह और सभी एक-दूसरे से आगे निकलना चाहते हैं यानि कोई भी यह नहीं चाहता कि मैं पीछे रह जाऊँ।

बचपन से ही स्पर्धा को प्रतिस्पर्धा का रूप दे दिया जाता है। हर कोई जीतना चाहता है। चाहे कोई भी, कैसा भी क्षेत्र हो, खेल या पढ़ाई हो, व्यवसाय या व्यापार हो। हर इन्सान दूसरे से आगे निकलकर दिखाना चाहता है। अगर वह आगे निकल जाने में सफल हो जाता है तो वह उसे अपनी उपलब्धि तो मानता ही है उसमें उसको बाकियों को हराने का और अपनी जीत का अहसास भी होता है साथ ही स्वाभिमान भी होता है परन्तु इस स्वाभिमान को वह अभिमान का रूप दे बैठता है। इस तरह का प्रश्न लेकर कुछ मित्र अपने दादा जी के पास गये और इस प्रश्न का हल जानने की प्रार्थना की।

इस पर दादा जी ने एक उदाहरण के द्वारा समझाया– देखो बच्चों! एक गाँव में कभी भी दौड़ की प्रतियोगिता नहीं हुई थी। एक बच्चे को इच्छा हुई कि मैं भागूं और सभी मुझे देखें। इस तरह उस बच्चे के लिए एक मैदान तैयार किया गया और वह दौड़ा। वह प्रथम आया क्योंकि वह अकेला ही भागा था। अगली बार तीन-चार अन्य बच्चों ने भी हिस्सा लिया फिर भी वह बच्चा प्रथम आया क्योंकि वह सबसे आगे निकलना चाहता था और वह इसके लिए मेहनत और अभ्यास भी करता था। इस तरह वह अनेकों बार प्रथम ही आया। लोगों ने उसका खड़े होकर हमेशा की तरह अभिवादन किया और हौसला बढ़ाया। एक बार दौड़ की स्पर्धा का आयोजन हुआ। उसको एक बुजुर्ग व्यक्ति कमजोर महिला के साथ दौड़ने को कहा गया। वह बालक हैरान था। फिर भी वह दौड़ा और अपने निश्चित स्थान पर पलभर में पहुँच गया परन्तु बाकी दोनों ने अभी दौड़ना आरम्भ ही नहीं किया था। इस बार किसी ने ताली नहीं बजाई और न ही उसका अभिवादन किया। बालक ने अपने गुरुजनों से पूछा और तब उन्होंने कहा कि अब तुम तीनों एक साथ ही अन्तिम रेखा को पार करोगे। इस बार बालक ने एक को अपनी दायीं ओर से और दूसरे को बायीं ओर से पकड़ा और अन्ततः उस रेखा को पार किया। फिर तो वहाँ बैठे सभी लोगों ने भरपूर तालियों से उस बालक का अभिवादन किया।

दादा जी ने फिर बताया कि इस बार उस बालक की जीत एक अनोखी जीत थी। ऐसी जीत उसने जीवन में कभी नहीं जीती थी। इस बार लोगों ने जीतने वाले के लिए तालियां बजाई कि कौन जीता है। इस बार जीतने की आकांक्षा ही नहीं थी। जीत का कोई पैमाना ही नहीं था। हमें भी सोचना है कि हम किसके लिए जीतना चाहते हैं? क्या हम केवल कमजोर और उपेक्षित लोगों से आगे निकलना चाहते हैं? क्या हम उन लोगों को साथ लेकर चले जो स्वयं चल नहीं सकते थे। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि हम जीते परन्तु हम किस प्रकार जीते यह अधिक महत्वपूर्ण है। हम जीवन के किस मकसद को लेकर आगे बढ़ें और किस ढंग से आगे बढ़ें? जिन्दगी हार-जीत के लिए नहीं बल्कि सबको साथ लेकर मिल-जुलकर जीने का नाम है। जिन्दगी-जिन्दाबाद क्योंकि इस जीवन में ही हम अपना जीवन सफल कर सकते हैं।

अपनी जिन्दगी को सफल बनाने और दिशा देने के लिए 75वां वार्षिक निरंकारी सन्त समागम 16 से 20 नवम्बर 2022 को समालखा (हरियाणा) में आयोजित किया जा रहा है। हम सभी इस अवसर को अपने कल्याण का साधन बना सकते हैं।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ :

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 262

चन्न भुलेखे मुंह विच अग नूं जिवें चकोरा पा लैन्दा ए।
फुल दी गोदी बह के भंवरा जिद्दां जान गंवा लैन्दा ए।
लख पतंगे इक शमां ते सड़ सड़ के मर जांदे ने।
कई पपीहे स्वांत बूंद लई अपणा आप गुआंदे ने।
एह सभ प्यार ने इक पासे दे दूजे नूं कुझ सार नहीं।
कहे अवतार बिना गुर पुरे प्यार दा बेड़ा पार नहीं।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि संसार में लोगों को प्यार का सार क्या है, इसका बोध नहीं है। संसार यह भी नहीं समझ पाता कि प्यार के बिना बेड़ा पार नहीं होता। संसार का प्यार एक तरफा है। एक प्यार कर रहा है पर दूसरे को उस प्यार का अहसास तक नहीं है। चकोर पक्षी चन्द्रमा से प्यार करता है। चांद की ओर निहारता रहता है। यह वियोगी पक्षी चांद की ओर देखकर आंसू बहाता है। तो कभी चांद के भ्रम में रोशनी देने वाले पदार्थों, वस्तुओं को चांद समझ बैठता है। इसी भ्रम में वह जलते हुए अंगारे को खाने का प्रयास करता है।

इसी तरह खिले हुए फूलों पर भंवरे खुश होकर गुनगुनाते हुए बैठ जाते हैं और उसकी महक और मधुरता पर इतना मुग्ध हो जाते हैं कि उन्हें समय का पता ही नहीं चलता। शाम होते ही जब सूर्य ढल जाता है तब खिला हुआ फूल बंद हो जाता है और उसके साथ भौंरा भी उसी में फंसकर अपनी जान गंवा बैठता है। यह प्यार भी एक तरफा प्यार है। यह केवल भौंरे की ओर से होता है, फूल को इसका अहसास ही नहीं होता।

बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि शमां जब जलती है तो लाखों पतंगे अपनी जान की परवाह किए बिना उसकी रोशनी की ओर खिंचे चले आते हैं और जलकर अपनी जान गंवा बैठते हैं। एक तरफा प्यार का यही अंत होता है कि एक सब कुछ गंवा रहा है और दूसरे को इसका अहसास भी नहीं है। इसी तरह पपीहा पक्षी स्वाति नक्षत्र में बरसने वाले जल को पीकर तृप्त होना चाहता है लेकिन अगर स्वाति नक्षत्र में बरसात ही न हो तो पपीहा प्यासा ही रह जाता है और अपनी जान गंवा बैठता है।

बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि ऐ दुनिया के लोगों! इस सच्चाई को समझो कि जब तक पूर्ण सत्गुरु नहीं मिलता, तब तक न प्यार का पता चलता है और न ही जीवन का सार समझ में आता है। प्रभु से प्यार किए बिना भवसागर से बेड़ा पार नहीं हो सकता। इस प्यार के बिना जीवन की नैया का मझधार में डूबने का डर रहता है।

बाबा अवतार सिंह जी कहते हैं कि चकोर, भौंरे, पतंगे, पपीहे के एक तरफा प्यार से सीख लेकर इन्सान को प्रभु से सच्चा प्यार करना है जो केवल सत्गुरु की कृपा से ही प्राप्त होता है।

भावार्थ : हरजीत निषाद

अनमोल वचन

❖ हमने अपने जीवन में मधुरता रखनी है और सद्भाव में चलते हुए सभी को प्यार बांटना है। संदेश छोटा हो या बड़ा जब हम उसे अपनी जिंदगी में उतारेंगे तो जीवन पर उसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा और हम एक बेहतर इन्सान बन सकेंगे।

❖ हमारी भक्ति तभी दृढ़ होगी जब सुमिरण में हमारा मन लगा होगा, सत्संग में बैठकर हमारा मन इधर-उधर नहीं भागेगा और सेवा भी तभी परवान है जब हमारी भक्ति मर्यादा के अनुसार होगी।

❖ परमात्मा की पहचान होने पर किसी के प्रति नफरत का भाव नहीं रहता। जिस प्रकार आग को बुझाने के लिए पानी की आवश्यकता होती है, इसी प्रकार नफरत की आग को बुझाने के लिए प्रेमपूर्वक व्यवहार की जरूरत है।

❖ उच्च शिक्षा की उपलब्धियों के साथ-साथ इन्सान का व्यवहार भी नम्र होना चाहिए।

❖ परमात्मा को हमसे बेहतर पता है कि हमें क्या चाहिए और इसने हमें जो दिया है बहुत अच्छा दिया है। जितना हम शुकराने के भाव में रहेंगे उतना हमारा जीवन सुन्दर बनेगा और हम अपने आपको एक इन्सान कहलाने के काबिल बना पाएंगे।

– सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज

❖ जीवन के विकास के लिए अभिमान का त्याग परम आवश्यक है। अभिमान से घृणा का जन्म होता है, प्यार का अन्त होता है।

❖ गुरु के आदेश ही जीवन को सफल बनाते हैं।

– बाबा हरदेव सिंह जी महाराज

❖ जीवन का एक पल करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं के देने पर भी नहीं मिलता है। **– चाणक्य**

❖ कुछ नहीं करोगे तो कुछ नहीं बनोगे।

– होब

❖ आत्म-त्याग से आप दूसरों को नि:संकोच त्याग करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

– बनार्ड शा

❖ जिनमें उत्साह नहीं है, वे केवल काठ के पुतले हैं। **– संत तिरुवल्लुवर**

❖ किसी की मेहरबानी मांगना अपनी आजादी बेचना है। **– महात्मा गाँधी**

❖ कर्म करने में ही तुम्हारा अधिकार है, फल में नहीं। **– श्रीमद्भगवद्गीता**

❖ मानव का सच्चा जीवन-साथी विद्या ही है, जिसके कारण वह विद्वान कहलाता है।

– दयानन्द सरस्वती

संकलन : रीटा (दिल्ली)

कविता : राजेश निषाद

दशहरा

दशहरा अधर्म पर धर्म की है जीत।
बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक।

दस सिरों वाला रावण अधर्म पर अड़ा है।
मेघनाद, कुंभकर्ण भी संग खड़ा है।

दशहरे के मेले में धूम मची है।
गुम नहीं जाना वहां भीड़ बड़ी है।

रामबाण से पुतला धू-धू जलेगा।
रावण का अभिमान धूल में मिलेगा।

राम वाले गुण हम सभी अपनाएं।
रावण की भूलों से शिक्षा ले पाएं।

कविता : राजेन्द्र निशेश

सच की जीत सदा है होती

सच की जीत सदा है होती,
ऐसा सब ज्ञानी हैं कहते।
चाहे कितनी कठिन परीक्षा,
वीर बुराई कभी न सहते।।

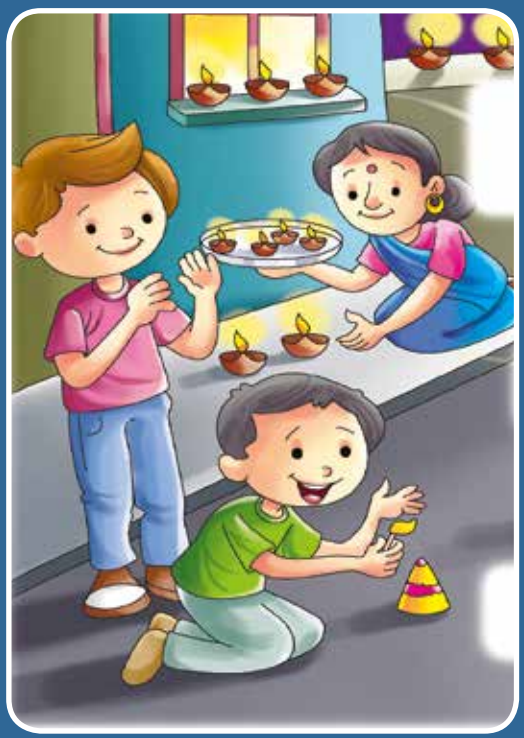

अच्छाई का स्वागत करने,
दीपों के ले थाल चले हैं।

मिलकर सारे बांट रहे हैं,
प्यार भरी यह सुन्दर घड़ियां।
हर आंगन में दमक रही है,
सात रंग की सुन्दर लड़ियां।।

रूठों को भी गले लगाने,
हर हृदय के द्वार खुले हैं।

झिलमिल करती फुलझड़ी है,
नाच रही फिरकी मतवाली।
आज उमंगों का मेला है,
भावों के लो सुमन खिले हैं।।

अंधकार से लोहा लेने,
पंक्ति पंक्ति दीप जले हैं।

कछुए का उपकार

गाँव से थोड़ी दूर एक बड़ा तालाब था। उस तालाब के किनारे आम के पेड़ लगे हुए थे। गाँव के बच्चे स्कूल से छुट्टी होने के बाद रोज तालाब के किनारे खेलने आते थे। चरवाहे भी अपने पशुओं को उस तालाब पर पानी पिलाने लाते। आम पकने शुरू हो गये थे, बच्चे रोज पेड़ से आम तोड़ने लगे।

कुछ दिनों बाद आम के पेड़ पर कौवा और कौवी आकर रहने लगे। कौवा बेहद शरारती था। गाँव के छोटे-छोटे बच्चों के हाथों से रोटी आदि छीन लेता था। यही नहीं दूसरे पक्षियों को भी परेशान करते रहने की उसकी आदत थी। आसपास के वृक्षों पर रहने वाले पक्षी भी उससे तंग आ चुके थे।

तालाब में एक कछुआ भी रहता था। जब वह तालाब से निकलकर जमीन पर चलता तो कौवा उसकी पीठ पर सवार हो जाता और उसकी पीठ पर चोंच मारता। लेकिन कछुआ उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता था। हारकर कछुआ पानी में चला जाता।

लेकिन कौवी अच्छे स्वभाव की थी। वह कौवे को समझाती कि किसी को परेशान करना अच्छी बात नहीं है। पर कौवा उसकी कोई बात नहीं मानता।

एक दिन जब कौवा फिर कछुए की सवारी करने लगा तो कछुए को गुस्सा आ गया।

वह बोला– क्यों काले कौवे! तुम मेरी पीठ पर बैठकर मुझे क्यों तंग करते हो? आखिर तुम चाहते क्या हो? किसी को ऐसे तंग करना क्या शोभा देता है तुम्हें?

इस पर कौवा बोला– मुझे तुम पर सवारी करने में बड़ा मजा आता है। तुम तो मेरी रेलगाड़ी हो और मैं सवारी।

कछुआ कौवे का उत्तर सुनकर और भी परेशान हो गया। उसने पानी से बाहर निकलना ही बन्द कर दिया।

कौवी ने तालाब के किनारे खड़े एक आम के पेड़ पर अंडे दिये। पेड़ पर आम पकने लगे थे। एक दिन गाँव के बच्चे पेड़ पर चढ़कर आम तोड़ने लगे तो कौवा दम्पति ने 'कांव-कांव' करके चिल्लाना शुरू किया। बच्चे आम तोड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ बैठे और पेड़ को जोर-जोर से हिलाना शुरू कर दिया। इसी दौरान पेड़ के घोसले में रखा कौवे का एक अंडा तालाब में जा गिरा।

यह देख कौवा और कौवी और भी ज्यादा परेशान हो गये। क्या करें, क्या न करें उन्हें कुछ समझ नहीं आ रहा था?

कुछ ही पल बाद उन्होंने देखा कि वही कछुआ अपने मुँह में उनका अंडा लिए चला आ रहा है। उसने अंडे को जमीन पर रखा और बोला– शुकर है कि तुम्हारा अंडा पानी में ही गिरा। यदि जमीन पर गिरता तो टूट जाता। मैंने इसे गिरते देख पानी में ही अपने मुँह में लपक लिया था। अब चिन्ता की कोई बात नहीं, यह सुरक्षित है। सम्भालिए इसे। अंडे को सुरक्षित देख कौवी खुश हो गई।

कौवा कछुए के साथ किए गये अपने व्यवहार पर शर्मिंदा था। कछुए को धन्यवाद देने के लिए कौवा-कौवी के पास शब्द नहीं थे।

कछुए ने कौवे के दुर्व्यवहार का बदला अच्छे व्यवहार से देकर उसका दिल जीत लिया।

महात्मा कन्फ्यूशियस ने अन्तिम समय में अपने शिष्यों को बुलाकर अन्तिम शिक्षा दी– देखो मेरे दांत! मेरे जन्म के बाद आये पर पहले चले गये। जीह्वा शरीर के साथ आई पर अभी भी है। जानते हो क्यों? क्योंकि दांत सख्त व अहंकारी थे व जीह्वा विनम्र व लचकदार है।

विज्ञान-लेख : जयेन्द्र

ब्रह्मांड
की बढ़ती उम्र के राज

ब्रह्मांड कई रहस्यों का पिटारा है, कुदरत का कुदरती जादू शायद इस पर मेहरबान है। कुदरत के हसीन नजारे चांद, सूरज, तारे, पेड़-पौधे, जल आदि जीवन में प्राण फूंकते हैं, खैर....

आखिर ब्रह्मांड की उम्र कितनी है, इस संदर्भ में पुराण, धार्मिक मान्यताएं और वैज्ञानिक तथ्यों में काफी अन्तर है। वैज्ञानिकों की नई खोजें कहती हैं कि कम से कम 32 अरब साल तक ब्रह्मांड का बाल भी बांका नहीं होगा।

हाँ, जिस 'डार्क एनर्जी' को इस विशाल ब्रह्मांड के लिए खतरा माना जा रहा था, वह लंबे समय तक इसे कोई क्षति नहीं पहुँचा सकेगी।

26 अगस्त 1920 में, इस संदर्भ में वैज्ञानिक एडविन ने अपने शोध लेख में लिखा था– ब्रह्मांड में विभिन्न आकाशगंगाएं लगातार एक दूसरे से दूर होती जा रही हैं, इससे उसका क्षेत्रफल बढ़ रहा है। आकाशगंगाएं दूर होने का कारण 'डार्क एनर्जी' है, जो ब्रह्मांड के हर हिस्से में है और वह उसका शोधन करती रहती है। यही नहीं, वह गुरुत्त्वाकर्षण का प्रतिरोध भी करती है। इस कारण आकाशगंगाओं के दूर होने और ब्रह्मांड के विस्तृत होने के कारण 'डार्क एनर्जी' में भी वृद्धि हो रही है। इसी 'एनर्जी' के कारण तारों में विस्फोट का दौर चलता रहता है।

एक शोध तथ्य के आधार पर अमेरिका के वैज्ञानिकों का मानना है कि ब्रह्मांड का 70 फीसदी हिस्सा इसी 'डार्क एनर्जी' से बना है बाकी हिस्सा एक और रहस्यमय पदार्थ से बना है जिसे वैज्ञानिकों ने 'डार्क मैटर' का नाम दिया है। इस बचे हुए हिस्से में से सिर्फ तारे, ग्रह ही सजीव असली पदार्थ से बने है।

धरती पर आने वाली प्राकृतिक आपदाएं जैसे भूकंप, ज्वालामुखी, सुनामी, बाढ़, तूफान, चक्रवात, आंधी, तेजाब जैसे घातक पानी की वर्षा आदि से अभी तक तो ऐसा माना जाता रहा है कि प्रकृति के ये प्रकोप ब्रह्मांड की उम्र को हर बार 25 से 50 साल तक कम कर देते है। लेकिन ताजा वैज्ञानिक खोजों ने यह साबित कर दिया है, प्राकृतिक आपदाएं ही ब्रह्मांड की उम्र में वृद्धि करती हैं। ❖

ऐसे हुआ एवरेस्ट का नामकरण

नेपाल में स्थित गिरिराज हिमालय की पूर्वी गिरिशृंखलाओं के मध्य विश्व का सर्वोच्च पर्वत शिखर माउंट एवरेस्ट शोभायमान है। इसकी ऊँचाई 29,029 फीट यानी लगभग 8,848 मीटर है।

एवरेस्ट के नामकरण की कहानी काफी दिलचस्प है। प्रारम्भ में इसे नेपाली 'सागरमाथा' तथा तिब्बती और चीनी 'चोमोलुंगमा' कहते थे। सन् 1852 में भारत सरकार के एक सर्वेक्षण दल ने संसार के इस सर्वोच्च पर्वत शिखर के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारियां तथा सूचनाएं इकट्ठी कीं। सर्वेक्षण दल के एक बंगाली क्लर्क राधानाथ सिकदर ने इस पर्वत शिखर के सम्बन्ध में तत्कालीन सर्वेक्षक जनरल सर जॉर्ज एवरेस्ट को जानकारी दी। सिकदर ने इस पहाड़ी चोटी की ऊँचाई तथा उसकी स्थिति की भी खोजबीन की थी। सिकदर को तो कुछ नहीं मिला लेकिन काफी समय के बाद जब इस चोटी के नामकरण का सवाल पैदा हुआ वो सर जॉर्ज एवरेस्ट के नाम पर चोटी का नाम रख दिया गया।

शुरुआत में माउंट एवरेस्ट लोगों के लिए जिज्ञासा और आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बना रहा। सन् 1921 में प्रथम बार इस चोटी तक पहुँचने के लिए इंग्लैंड से एक अनुसंधान दल रवाना हुआ मगर वह मामूली जानकारी ही प्राप्त कर सका। सन् 1922 में एवरेस्ट पर आरोहण की चुनौती स्वीकार की गयी। तत्पश्चात् अनेक बार एवरेस्ट पर चढ़ने की कोशिश की गयी मगर असफलता ही हाथ लगी। 29 मई सन् 1953 को पूर्वाह्न साढ़े ग्यारह बजे न्यूजीलैंड के एडमंड हिलेरी तथा एक शेरपा तेनजिंग नॉर्गे एवरेस्ट पर आरोहण में सफल हो गये। इन पर्वतारोहियों का कथन था कि माउंट एवरेस्ट पर विजय पाना कोई हँसी खेल नहीं है। इसके बाद अनेक पर्वतारोही एवरेस्ट पर चढ़कर विजय पताका फहरा चुके हैं।

❖

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

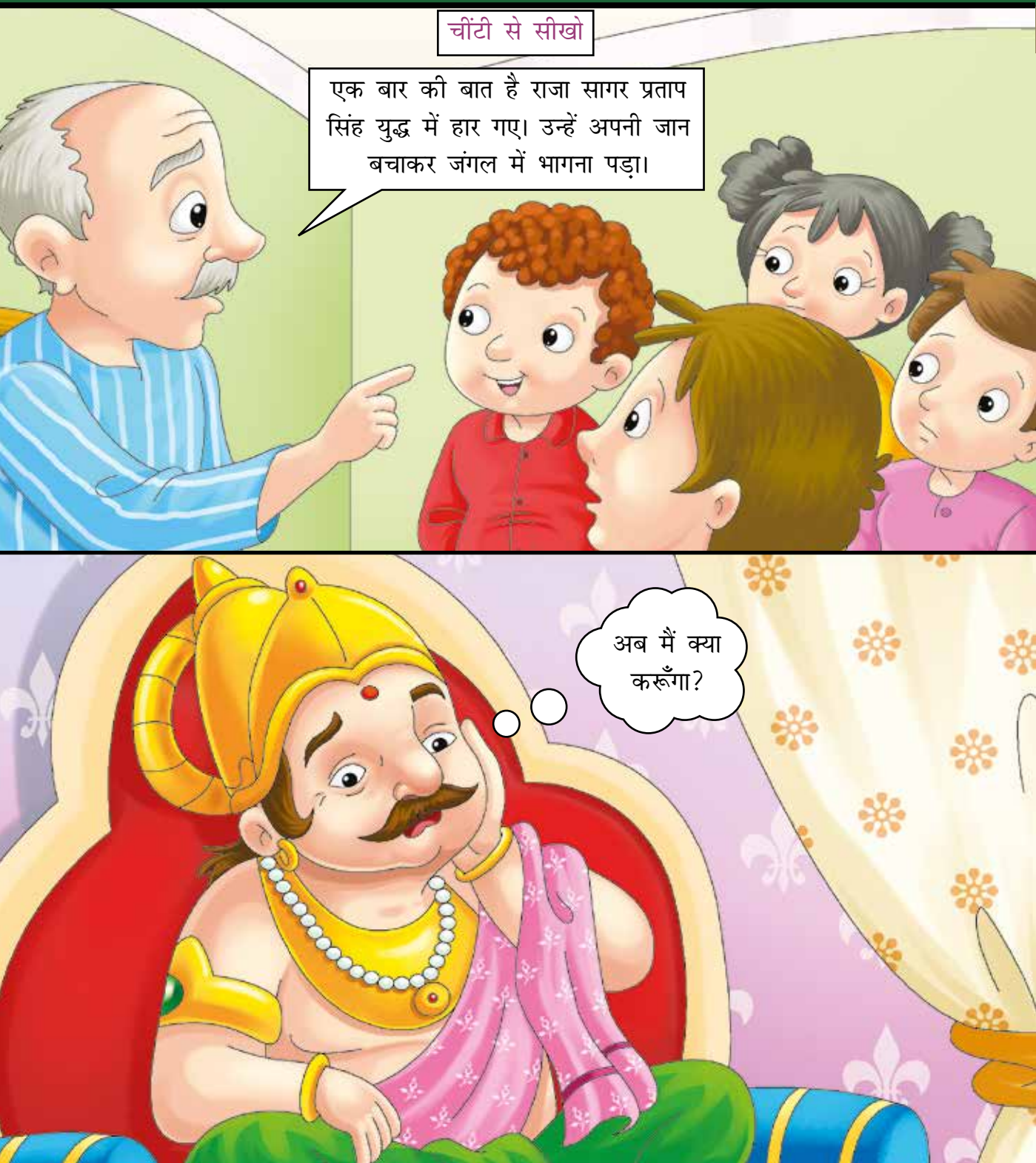

वे एक गुफ़ा में छिपकर रहने लगे।
अचानक उनकी नज़र दीवार पर चढ़ रही एक चींटी पर पड़ी।
चींटी अपने से बड़े एक मृत कीड़े को लेकर दीवार पर चढ़ने की कोशिश कर रही थी।
परंतु चींटी ऊपर चढ़ने में सफल नहीं हो पा रही थी।

बार-बार नीचे गिरने के बावजूद चींटी हार नहीं मान रही थी।
वह कीड़े को पकड़कर बार-बार ऊपर चढ़ने की कोशिश करती रही।
अंततः कड़ी मेहनत के बाद चींटी ऊपर चढ़ने में सफल हो गई।
यह दृश्य देखकर राजा का खोया हुआ आत्मविश्वास जाग उठा।
अब राजा आत्मविश्वास से भर चुका था।

आत्मविश्वास से भरे राजा ने सोचा– "जब एक छोटी-सी चींटी बार-बार प्रयास करके सफल हो सकती है, तो मैं क्यों नहीं?"
राजा ने हिम्मत जुटाकर युद्ध करने का फैसला किया। उसने पुनः सेना का गठन किया।
राजा सागर प्रताप ने अपना खोया हुआ राज्य दोबारा हासिल कर लिया।
इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमें तब तक कोशिश करनी चाहिए जब तक कि हम सफल न हो जाएँ।

गाँधी जी की सार्थक बातें

गाँधी जी सादगी और स्वावलम्बन पर विश्वास रखते थे। बाहरी तड़क-भड़क और थोथे आडम्बरों से उन्हें सख्त घृणा थी। एक पैसे की बर्बादी को भी वे देश का नुकसान मानते थे। नोआखली की यात्रा में गाँवों की महिलाएं व पुरुष उनका बहुत स्वागत करते थे। कभी तिलक करके, कभी ताड़ के पत्तों से गाँव को सजाकर। बापू को इसमें कोई ऐतराज नहीं होता था किन्तु एक बार देवीपुर गाँव में लोगों ने फूल, जरी, रेशम की पट्टियां, लाल-पीले कागज वगैरह मंगवाकर गाँव को सजाया तथा घी, तेल के दीपक भी जलाए गये। यह सजावट देखकर बापू गम्भीर हो गये। उन्होंने पूछा कि इस सजावट के लिए पैसे कहाँ से आए?

कुछ व्यक्तियों ने जवाब दिया कि लोगों से चन्दा इकट्ठा कर यह सजावट की है।

इस पर बापू बोले– यह सजावट एक क्षणभर में कुम्हला जाएगी। यह सब फिजूलखर्ची है। इससे तो मुझे यही लगता है कि मेरी बातों को तुम अपना नहीं रहे हो। जितने फूलों के तुमने हार पहनाएं हैं, उनके बजाय यदि सूत के हार पहनाते तो वे बाद में कपड़ा बनाने के काम भी आते, फिजूल नहीं जाते। फिर तुम तो कार्यकर्ता हो। मैं तो इतना ही कहना चाहता हूँ कि मेरी दृष्टि में यह सब फिजूलखर्ची और पैसे की बर्बादी है। तुम पर से मुझे अपने सब कार्यकताओं का अन्दाज होता है कि जो कार्यकर्ता एक दिन लोगों के सेवकों के नाम से पहचाने जाते थे। उन्हें यदि लोग ओहदे पर बिठाएं तो वे यों फूल हार पहनने-पहनाने के लालच में कहीं गिरने न लगे।

हाँ, गाँधी जी की यह बात आज भी कितनी खरी उतरती है।

गाँधी जी के जीवन की यह एक अलग प्रेरक घटना है। अहमदाबाद में गुजरात विद्यापीठ की स्थापना हुई। प्रश्न यह आया कि दलितों को इसमें प्रवेश दिया जाए या नहीं। विद्यापीठ के नियामक मण्डल में ऐसे लोग थे जो अस्पृश्यता के हामी थे तथा इस सुधार के लिए तैयार नहीं थे। इस अनिर्णीत प्रश्न को लेकर सदस्य गाँधी जी के पास गये। उन्होंने दलितों को अनिवार्यतः प्रवेश दिये जाने पर बल दिया। इस बात की चर्चा सारे गुजरात में होने लगी। उच्च वर्ग के कुछ धनाड्यों ने गाँधी जी से कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा का कार्य बड़ा धर्म कार्य है। वे उसमें जितनी धनराशि गाँधी जी कहें, देने को तैयार हैं किन्तु दलितों के सवाल को इससे दूर ही रखना चाहिए।

गाँधी जी ने जो उत्तर दिया वह बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा– विद्यापीठ निधि की बात तो अलग रही, कल अगर कोई मुझे अस्पृश्यता कायम रखने की शर्त पर हिन्दुस्तान का स्वराज्य भी दे तो मैं नहीं लूंगा।

इसी प्रकार साम्प्रदायिकता के विष को भी वे निरन्तर दूर करने में लगे रहे। उन्होंने यह अनुभव किया कि हमारे देश में जो विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं। उन सबमें एकता की भावना की आवश्यकता है। हिन्दू और मुसलमान भारतीय समाज के मुख्य अंग हैं। इन दोनों के पुष्ट होने से ही समाज सशक्त हो सकता है। ऐसा वे मानते थे। ❖

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

सीख

धरती से सीखा है हमने,
सबका बोझ उठाना।
और गगन से सीखा हमने,
ऊपर उठते जाना।।

सूरज की लाली से सीखा,
जग आलोकित करना।
चन्दा की किरणों से सीखा,
सबकी पीड़ा हरना।।

पर्वत से सीखा है हमने,
दृढ़ संकल्प बनाना।
और नदी से सीखा हमने,
आगे बढ़ते जाना।।

शेरों से सीखा है हमने,
अपनी रक्षा करना।
और शहीदों ने सिखलाया,
हँसते-हँसते मरना।।

बाल कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत

अच्छी बातें

बात काम की सुन लो बच्चों,
कभी न करना तुम अभिमान।
अच्छे बच्चे जल्दी उठकर,
मात-पिता को करें प्रणाम।।

मिथ्या-भाषण कभी न करना,
बड़ों का करो सदा सम्मान।
जीवन के पथ पर चलना,
सच्चाई को लक्ष्य मान।।

कर्म-क्षेत्र में आगे बढ़ना,
सदा विनम्रता से रहना।
कोई बुराई छू न पाये,
अच्छी बातों का है कहना।।

जानकारी : राधा नाचीज

दृष्टिहीनों की लिपि का जन्मदाता

लुई ब्रेल ने स्वयं अन्धे होते हुए भी विश्वभर के नेत्रहीनों को नेत्रवालों के समान शिक्षित होने के लिए एक साधन जुटाया। उन्होंने एक ऐसी लिपि का आविष्कार किया, जिसके उभरे हुए अक्षरों को छूकर नेत्रहीन साक्षर हो सकते हैं। इसे ही 'ब्रेल लिपि' कहा जाता है।

लुई ब्रेल का जन्म 1809 में फ्रांस में हुआ था। उनके पिता पेरिस में चमड़े का सामान बनाते थे। बालक ब्रेल ने एक दिन खेलते हुए चमड़ा सीने का औजार आँख में मार लिया। एक आँख जाने के बाद कुछ दिनों बाद दूसरी आँख भी खराब हो गई। बालक ब्रेल पाँच वर्ष की आयु में अन्धा हो गया। पिता ने उसे दृष्टिहीनों के स्कूल में दाखिल करवा दिया। एक अवकाश प्राप्त सैनिक ने कागज पर उभरे बिन्दुओं से पढ़ना सिखाया। ब्रेल को उस लिपि में कुछ कमियां लगीं। उसने कुछ वर्षों के श्रम से एक नई उभरी हुई लिपि का आविष्कार किया, जिसे दृष्टिहीन पढ़ सकते हैं। आज इस लिपि में अनेक पुस्तकें भी छप चुकी हैं। ब्रेल ने स्वयं दृष्टिहीन होते हुए भी दृष्टिहीनों को जीवन में सफल होने का मार्ग दिखाया।

ब्रेल लिपि से नेत्रहीन लोगों को शिक्षित करने के लिए विश्वभर में हजारों स्कूल खोले गए हैं। इस लोकोपयोगी देन के लिए मानव समाज सदैव ब्रेल का ऋणी रहेगा।

जानकारी : मिताली जैन

हजारों साल की आयु का विचित्र पौधा

प्रकृति में इतने रहस्य हैं कि सामान्य मनुष्य के लिए अंदाजा लगा पाना भी मुश्किल है। खासतौर से वनस्पति जगत में। दुनिया में पेड़-पौधों की हजारों प्रजातियां पायी जाती हैं और सभी की अपनी अनोखी विशेषताएं होती हैं। ऐसे ही एक पौधे का नाम है– वेलविचिया मिराबिलिस।

वेलविचिया मिराबिलिस की पत्तियां लंबी और चौड़ी होती हैं, जो वेलविचिया को कवर करके 65 डिग्री सेल्सियस के उच्च तापमान में भी न सिर्फ जीवित रहने में मदद करती है, अपितु ठंडक और नमी भी प्रदान करती हैं। इन्हीं पत्तों के सहारे वेलविचिया अपना पूरा जीवन आराम से व्यतीत कर लेता है। इसलिए इसे दुनिया का सबसे प्रतिरोधी पौधा माना जाता है।

अफ्रीका में नामीबिया देश के रेगिस्तान में पाया जाने वाला यह पौधा लगभग 400 से लेकर 1500 साल तक जीवित रहता है। इसके इतने साल तक जीने के कारण ही इसे विचित्र, अजीब और जीवित जीवाश्म की संज्ञा दी गई है। इस पौधे को खोजने का श्रेय ऑस्ट्रिया

के वनस्पति विज्ञानी फ्रेडरिक वेलविच को दिया जाता है, जिन्होंने 1860 में अंगोला के दक्षिणी भाग के नामिब नामक रेगिस्तान में इसकी खोज की। जब फ्रेडरिक ने पहली बार इस पौधे को देखा तो वह इतने आश्चर्यचकित हुए कि घुटने के बल बैठकर इसे टकटकी लगाए देखते ही रह गए, हालांकि उस समय इसकी सरंचना देखकर वह थोड़े डर भी गए थे। चूंकि फ्रेडरिक वेलविच के प्रयासों के कारण ही विश्व को इस अजीबोगरीब पौधे के बारे में जानकारी मिली, इसलिए अन्य विज्ञानी जोसेफ हूकर ने उनके सम्मान में इस पौधे का नाम वेलविचिया मिराबिलिस रखने का सुझाव दिया।

बदसूरत पौधों में शुमार

जहाँ वेलविचिया फ्रेडरिक वेलविच के नाम से लिया गया है, वहीं 'मिराबिलिस' का अर्थ लैटिन भाषा में अद्‌भुत या असाधारण है। इसकी विशेषता के कारण ही इसे यह नाम दिया गया। हालांकि स्थानीय जगहों पर इसे अलग-अलग नाम से पुकारा जाता है। जहाँ नामा में यह खुरुब और खरोस के नाम से जाना जाता है, वहीं डमारा में न्यानका और हेरेरो में ऑनयांगा नाम से प्रसिद्ध है। यह दिखने में काफी भयानक होता है, इसलिए इसे दुनिया के सबसे बदसूरत दिखने वाले पौधों में शुमार किया गया है।

यह बारहमासी पौधा है, जिसका तना छोटा और जड़े काफी मोटी होती हैं, जो इसे रेगिस्तान में भी जीवित रखने में सहायक होती हैं। इसके पत्ते सदाबहार, बड़े और चपटे होते हैं। इन्हीं पत्तों की सतह पर वेलविचिया के रंध्र होते हैं। इसके पत्ते की लंबाई लगभग छह मीटर तक होती है। सामान्यत: इसके प्रत्येक शंकु के भीतर केवल एक ही बीज विकसित होता है, जो हवा की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच जाता है। अंकुरण के बाद बीजपत्रों की लंबाई 25 से 35 मिलीमीटर हो जाती है। बीजपत्रों के निकलने के बाद पत्तों को विकसित होने में लगभग चार माह का समय लगता है। ❖

अद्भुत विचित्रता भरी बातें

- संसार का सबसे बड़ा कछुआ ऑस्ट्रेलिया में पाया जाता है।
- कछुआ बिना पानी एवं वायु के कई दिन तक जीवित रह सकता है।
- टार्च जैसी रोशनी लेकर चलने वाली मछली का नाम जाइटेंटक है।
- नाइट्रस ऑक्साइड एक ऐसी गैस है जिसे आदमी सूंघता है तो हँसता ही रहता है।
- मनुष्य से 10,000 गुना अधिक कुत्तों में सूंघने की शक्ति रहती है।
- चमगादड़ से भी रेबीज फैलता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि चमगादड़ दुर्लभ किस्म वाले वायरसों के प्रथम वाहक होते हैं।
- कॉकरोच बिना भोजन के लगभग 45 दिन तक जिन्दा रहा सकता है।
- कोबरा सांप के एक ग्राम जहर से 100 से ज्यादा व्यक्ति मर सकते हैं।
- समुद्री मछली 'हैग फिश' के चार दिल होते हैं।
- हरे टिड्डे के कान उसके पैर पर होते हैं।
- दक्षिणी अमेरिकी बिटर्न पक्षी बाघ की तरह बोलता है।
- मेढक मक्खी के आकार से लेकर एक फुट तक भी लम्बा होता है।
- मछलियां सपने नहीं देखती क्योंकि उन्हें नींद ही नहीं आती।
- हमिंग बर्ड (गुनगुनाता पक्षी) की उड़ान बिल्कुल हेलीकॉप्टर की भांति होती है।
- विश्व का सबसे बड़ा जानवर नीली ह्वेल है जो 30 हाथियों के बराबर होता है।
- 'टुआटेरा' नामक जानवर की तीन आँखें पाई जाती हैं।
- आमतौर पर मकड़ी की आठ आँखें होती हैं फिर भी ये ठीक प्रकार से नहीं देख पातीं।
- दो जेब्रा की धारियां कभी एक समान नहीं हो सकतीं।
- साइबेरिया की बैकाल झील विश्व की सबसे गहरी झील है।
- अजगर एक साथ समूचे हिरण को निगल सकता है फिर इसको एक साल तक भोजन की आवश्यकता नहीं होती।
- कुत्ता एक मात्र ऐसा पशु है जो लगभग सभी देश और जलवायु में पाया जाता है।
- जिराफ की जीभ पूरी डेढ़ फुट लम्बी होती है।
- दक्षिण अमेरिका की 'टीनामाऊ' अथवा 'ईस्टर एग' पक्षी नीले, हरे, गुलाबी, पीले और बैंगनी रंगों के अंडे देते हैं।
- घरेलू मक्खी ग्रीष्मकाल में छः बार अंडे देती है और प्रत्येक बार में 120 अंडे देती है।
- समुद्र में पायी जाने वाली सीपी प्रतिवर्ष 6 करोड़ और परजीवी एस्केरिस 2.7 करोड़ अंडे देते हैं।
- एक तारा मछली एक बार में 1 लाख तथा ड्रोसोफिला (फल मक्खी) प्रतिमाह 20 हजार अंडे देती है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा

बाल कहानी : हरिन्दर सिंह गोगना

परोपकार का पुरस्कार

सुबह से वर्षा थमने का नाम नहीं ले रही थी। एक चिड़िया के बच्चे भूख के मारे शोर मचा रहे थे। अचानक वर्षा रूकी तो चिड़िया भोजन की तलाश में उड़ी। तभी एक मुर्गा भी भोजन की तलाश में निकला। उसने चिड़िया के बच्चों का विलाप सुना। उसने ऊँची छलांग लगाई व पेड़ पर चढ़कर चिड़िया के घोसले के पास आया। मुर्गे की चोंच में थोड़ा भोजन था। उसने चिड़िया के बच्चों के मुँह में डाल दिया। अब बच्चे थोड़ा सन्तुष्ट थे व मुर्गे को आत्मीयता की नजर से निहार रहे थे। मुर्गा फिर नीचे आया और थोड़ा भोजन ढूंढकर लाया। उसने बच्चों को प्यार से भोजन खिलाया। तभी चिड़िया भी पेड़ पर लौट आई। मुर्गे को देख वह थोड़ा घबरा गई। मगर जब उसे असलियत का पता लगा तो आँखें भर आईं। कहने लगी– भैया, तुमने आज मेरे भूखे बच्चों को अपना भोजन खिलाकर बड़ा एहसान किया है। मुझे कहीं भी भोजन नहीं मिला। लौटते समय यही चिन्ता सता रही थी कि अब क्या करूं?

–इसमें एहसान की क्या बात है बहन! प्राणी ही एक-दूसरे के काम आता है। मेरा ठिकाना पास ही में है। कभी कोई काम हो तो पुकार लेना। अच्छा बहन चलता हूँ, कहीं फिर वर्षा न आ जाए।– कहकर मुर्गा चल पड़ा।

रास्ते में मुर्गे के समक्ष एक देवता प्रकट हुए व बोले– तूने आज अच्छा कार्य किया है जो चिड़िया के भूखे बच्चों को भोजन खिलाया। अपना भोजन भूखे को खिलाना सबसे बड़ा पुण्य है। मैं तुम्हारी नेकी से बहुत खुश हूँ। मांगो क्या मांगते हो?

लेकिन मुर्गे की कोई इच्छा न थी। देवता के हाथ में लाल रंग का फूल था। बोले– तुम्हें परोपकार का पुरस्कार तो मिलना ही चाहिए। यह फूल सदैव तुम्हारी शोभा बना रहेगा। देवता ने वह हाथ वाला फूल मुर्गे के सिर पर सजा दिया जो आज भी उसके सिर पर सजा है जिसे हम कलगी कहते हैं।

❖

जानकारी (आलेख) : दीपांशु जैन

रंगीन संसार तितलियों का

मनभावन रंग बिरंगी तितली देखते ही सबका मन प्रफुल्लित हो उठता है। यह छोटा-सा जीव अपने आकर्षक, चमकदार चटख रंगों से सजा हुआ जब खूबसूरत फूलों पर मंडराता है तो बच्चों के साथ-साथ बड़ों का मन भी उसे पकड़ने के लिए लालायित हो उठता है।

जीव-जगत के 'लेपीडाप्रेटा' समूह में तितलियों को रखा जाता है। इस समूह में कुल एक लाख

चालीस हजार प्रकार की प्रजातियों में से अधिक हिस्सा शलभ अथवा मॉथ के रूप में पाया जाता है तथा तितलियों की कुल जातियों की संख्या 25000 के करीब पाई गई है।

यह तो आप जानते हैं कि तितली का जन्म एक प्रकार के केटरपिलर से होता है। एक बार अंडों से बाहर निकलने के बाद ये केटरपिलर पत्तों को चबाना शुरू कर देते हैं। पालिफेमस मॉथ के लार्वा को दुनिया का सर्वाधिक पेटू जीव कहा जाता है। उत्तरी अमेरिका में पाए जाने वाला यह लार्वा अपनी जिन्दगी के प्रथम 48 घंटों में ही अपने वजन से 86000 गुना भोजन चट कर जाता है। तौबा-तौबा! कितना पेटू जीव होता है यह। अगर यही तुलना हम एक सात पौण्ड वाले नवजात शिशु से करें तो इसका मतलब यह होगा कि बच्चा सिर्फ दो दिन में लगभग 300 टन भोजन अपने पेट में डाल ले।

आगे पढ़ने से पहले मॉथ और तितली का फर्क भी जान लें। इन दोनों जीवों में हमें भ्रम नहीं होना चाहिए। एक ही समूह में रहते हुए भी इनकी दिनचर्या अलग-अलग होती है। मॉथ या शलभ के शरीर पर बाल होते हैं। इसका शरीर भी तितली की अपेक्षा अधिक मजबूत होता है।

तितली दिनचर होती है जबकि मॉथ अधिकतर रात्रि-चर होते हैं।

ग्रेट ब्रिटेन एवं केनरी द्वीप समूह में पाया जाने वाला स्टेअन्टान तथा स्टिगमेला रिडिक्यूलोसा शलभ मात्र 0.08 इंच लम्बा-चौड़ा होता है। 'इवार्फ ब्ल्यू' नामक तितली जो दक्षिण अमेरिका में पाई जाती है के पंखों की चौड़ाई भी सिर्फ 0.55 इंच होती है। यह विश्व की सबसे छोटी तितली है। इसके विपरीत 'क्वीन एलेकजेन्ड्रा बर्ड विंग' नामक तितली सबसे बड़ी होती है। पपुआ न्यूगिनी में पाई जाने वाली इस तितली के एक पंख से दूसरे पंख तक की चौड़ाई 11 इंच से अधिक होती है।

सोलोमन द्वीप समूह में पाई जाने वाली अर्निथोप्टेरिया अलोरिया नामक तितली की प्रजाति दुनिया में बहुत कम पाई जाती है। इसकी सिर्फ बारह जातियां ही मिलती हैं।

तितलियों की घ्राण-शक्ति बड़ी तीव्र होती है। इनकी दूर-दृष्टि भी जीव-जगत में बहुत अधिक है। ये नौ फीट की दूरी तक देख सकती है। तितलियों को अपना प्रिय भोजन मकरंद प्राप्त करते समय कोई अन्य जन्तु इन्हें मारकर खा नहीं जाए इसलिए प्रकृति ने इन्हें कुछ विशेष रंग भी प्रदान किए हैं। 'डेडलीफ' तितली के पंख फैले होने पर चटकीले रंगों से युक्त दिखाई देते हैं किन्तु समेटने पर यह एक मुरझाई पत्ती के जैसी दिखाई देती है। शिकारी जन्तु इसे मात्र एक पत्ती जानकर आगे बढ़ जाता हैं। कुछ तितलियों के पंखों के पीछे की तरफ दो काले धब्बे होते हैं, जो शत्रु को आंख की तरह दिखाई पड़ते हैं। जब शत्रु इस झूठी आंख पर आक्रमण करता है तो उसे अपनी असली आंख से देख लेती है और बचकर भाग निकलती है। 'क्लाउडेड यलो' नामक तितली इस प्रकार अपना बचाव करती है।

प्राकृतिक शत्रु से तो तितली अपना बचाव कर सकती है परन्तु मानव अपने स्वार्थ के लिए इनका विनाश करने पर तुला है। कितना अच्छा हो अगर हम तितली को पकड़ कर संजोने के बजाए उसे स्वच्छंद विचरण करने दें।

जानकारी (पक्षी जगत) : उमेश प्रसाद सिंह

आकर्षक पक्षी हुदहुद

यूरोप के सभी देशों का मुख्य पक्षी है– हुदहुद। बोलते समय यह 'उक-उक' शब्द का उच्चारण करता है जिसे अंग्रेज 'हुप-हुप' कहते हैं। इस ध्वनि के कारण अंग्रेजों ने इसका नाम 'हुपू' रखा। इस उच्चारण को अन्य लोगों ने हुदहुद समझा और इसका नाम हुदहुद रखा। इसकी चोंच नाखून काटने वाली 'नहरनी' नामक औजार से मिलती-जुलती है, इसलिए हमारे देश के अनेक भागों में इसे 'हजामिन' भी कहते हैं। इसके सिर पर सुन्दर सी कलगी लगी होती है, जिस कारण कुछ लोग इसे 'शाह सुलेमान' कहकर पुकारते हैं। प्राचीन रोम में इसे उपुपा तथा यूनान में इपौपस नाम से भी जानते थे।

हुदहुद की चोंच पतली, लंबी तथा तीखी होती है जिसके जरिये यह आसानी से जमीन के भीतर छिपे कीड़े-मकोड़ों को ढूंढ निकालता है। इसे फल-फूलों का शौक नहीं। कीड़े-मकोड़ों को ही यह अपना आहार बनाता है। अक्सर यह पक्षी बाग-बगीचों, खण्डहरों आदि में नज़र आता है।

हुदहुद देखने में अत्यंत सुन्दर पक्षी है। नर और मादा, दोनों के सिर पर कलगी होती है जो इसकी खूबसूरती में चार चांद लगाती है। इसके शरीर का रंग एक जैसा नहीं होता। पंख सुनहरे और काले होते हैं। गर्दन का अगला हिस्सा बादामी रंग का होता है।

हुदहुद की लगभग एक दर्जन प्रजातियां हैं। इनमें से एक वे हैं, जिन्हें हम विलायती कह सकते हैं। इस प्रजाति के हुदहुद यूरोप के देशों में पाये जाते हैं। ये प्राय: सफेद होते हैं। इसकी दूसरी प्रजाति इसराइल और अरब देशों में पायी जाती है। इसके अण्डों का रंग हल्का नीला होता है। यह पक्षी पेड़, दीवार, खंडहर आदि के कोटरों (छिद्रों) में घोसला बनाता है। मादा तीन से 10 अंडे देती है। अंडों से यह तब तक नहीं हटती जब तक चूजे बाहर न निकल आएं। इस दौरान नर हुदहुद भोजन की व्यवस्था करता है।

प्राचीन यूनान के भित्ति चित्रों में हुदहुद ने विशिष्ट स्थान पाया है। कभी माना जाता था कि इस पक्षी के पंख सोने के हैं। इस अज्ञानता के चलते इन पक्षियों को बड़ी संख्या में नष्ट किया गया। ❖

कविता : अमृत हरमन

पंछी प्यारे

नील गगन में उड़ते पंछी,
कितने सुन्दर लगते।
रंग-बिरंगे नीले पीले,
दिन भर दाने चुगते।।

कौए की कांव कांव,
कितना शोर मचाती।
पर कोयल की कुहू-कुहू,
सबके मन को भाती।।

नन्ही चिड़िया और गौरैया,
तिनका-तिनका लाती।
इतना सुन्दर देख घोसला,
अक्ल मेरी चकराती।।

बत्तख और मुर्गाबी को,
जल में रहना भाता।
हंस तो मोती चुगता है,
पर बगुला मछली खाता।।

बुलबुल, तोता, मैना देखो,
कितने प्यारे लगते।
कबूतर हुद-हुद और चातक,
सुन्दर सारे लगते।।

मोर नाचता जब जंगल में,
कैसे पंख फैलाता।
राष्ट्रीय पक्षी है ये हमारा,
सांप को भी खा जाता।।

कठफोड़े की चोंच कैसी,
लकड़ी में भी कर दे छेद।
अंधेरे में भी देख लेती,
उल्लू की आँखें कितनी तेज।।

पक्षियों को उड़ता देख,
हमने वायुयान बनाया।
उड़ने का सपना मानव ने,
सच करके है दिखलाया।।

प्रस्तुति : कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

विज्ञान पहेलियां

1. मुखिया हूँ मैं सभी ग्रहों का,
लोग कहे मुझको एक तारा।
मेरे होने से जीवन संभव,
रोशन करता मैं जग सारा।।

2. जिसके आंगन में जीवन संभव,
नीला ग्रह जिसको सब माने।
सूरज के आगे पीछे घूमें,
नाम बताओ तो हम माने।।

3. बच्चो का हूँ प्यारा मामा,
लोग कहे मुझे चंदा मामा।
मेरे आंगन में पहले आया कौन?
बोलो बच्चो क्यों हो मौन।।

4. मेरा कोई रंग नहीं है,
मेरी कोई गंध नहीं है,
मेरा कोई स्वाद नहीं है,
दो अक्षर का मेरा नाम,
प्यास बुझाना मेरा काम।।

5. क्लोरीन और बूझे चूने के संयोग से,
जन्म हुआ है मेरा।
मुझे बनाने वाले प्रथम है टेनेंट,
रंग उड़ाना है काम मेरा।।

6. अल्प दाब पर गैसों में धाराप्रवाह से,
मैं जन्म लेती हूँ।
मैं नहीं चलती टेढ़ी राहें,
एक्स किरणें उत्पन्न करती हूँ।।

7. प्रबलतम अम्ल बनाने में,
होता है उपयोग मेरा।
सारणी में '7ए' का तत्व हूँ,
बताओ नाम मेरा।।

8. चाँद नहीं सूरज नहीं,
न दीपक अंगार।
गाँव-नगर जगमग करूं,
बिना आग उजियार।।

9. मैं रहता धरती को घेरे,
धरती रहती भीतर मेरे।
काम आवरण का मैं करता,
रात, दोपहर और सवेरे।।

10. धुआं, धूल व गंदी गैसे,
मिलकर मुझे बनाते।
नाम बताओ मेरा तुम,
मुझसे नुकसान उठाते।।

(पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें।)

कहानी : पुष्पारघु

उपहार
रानी तितली का

पायल एक चंचल और प्यारी बच्ची थी। पढ़ाई-लिखाई में भी अच्छी थी परन्तु उसकी एक आदत बहुत खराब थी। उस आदत के कारण उसकी मम्मी बहुत दु:खी होती थी। पापा भी समझाते रहते, पायल मान भी जाती थी कि अब वह तितलियों के पीछे नहीं दौड़ेगी। पर जैसे ही स्कूल से आती बैग को बरामदे में फेंक, बिना यूनिफॉर्म उतारे पहुँच जाती घर की बगिया में। वहाँ फूलों पर बैठी रंग-बिरंगी, रूपहली-सुनहली तितलियों को चुटकी में पकड़ लेती। नाजुक तितलियों के कोमल पंख पकड़ते ही उनका चमकीला पराग पायल की चुटकी पर लग जाता। तितली छूटने के लिए छटपटाती, नन्ही छिद्र-सी आँखों में आँसू भर लातीं फिर तड़पकर निश्चल हो जातीं। अक्सर उनके पंख टूटकर पायल की चुटकी में आ जाते पर उसके मन में दया न उपजती। उन तितलियों को अपनी कापी के पन्नों में सजाकर वह सहेलियों को दिखाती।

गर्मी की छुट्टियां थीं। पायल का तितली पकड़ अभियान जोरों से चल रहा था। आजकल तो वह सुबह उठते ही कॉलोनी के पॉर्क में चली जाती और घंटों तितलियों के पीछे दौड़ती। मम्मी कई बार बुलाती– पायल बेटा! नहा-धो लो, नाश्ता कर लो। परन्तु जब धूप बहुत तेज हो जाती पायल तभी घर आती।

एक दिन बहुत सुबह पायल बगिया में पहुँच गई। सूरज उगा न था, ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। बगिया महक रही थी पर तितलियां शायद सोई पड़ी थीं या पायल को देख छिप गई थीं। पायल ने हर फूल के पास जा-जाकर तितलियों को ढूंढा। फिर खीजकर बोली– देखती हूँ कब तक छिपी रहोगी? कभी तो बाहर आओगी।

तभी उसे आवाज आई– पायल सुनो। आवाज बड़ी धीमी पर मीठी थी। पायल ने चारों ओर देखा कोई दिखाई नहीं दिया। आवाज फिर आई– पायल मैं यहाँ हूँ पीले गुलाब के फूल पर।

–पायल वहाँ गई और देखकर हैरान हो गई। एक बड़ी सुनहरी तितली बोल रही थी। देखो पायल किसी को सताना बुरी बात है। यदि तुम वायदा करो कि मेरी तितलियों को नहीं मारोगी तो मैं तुम्हें एक उपहार दूंगी।

–तुम कौन हो? उपहार मिलेगा तो मैं तितलियों को पकड़ना छोड़ दूंगी।– पायल तुरन्त बोली।

तब तितली फिर बोल उठी– मैं तितलियों की रानी हूँ। देखो चम्पा के पेड़ के नीचे एक डिब्बी में पाँच सुनहरे गिट्टे रखे हैं। वे जादू के गिट्टे हैं जो हमेशा तुम्हें जिताएंगे। पर शर्त यह है कि खेल सुबह-सुबह होना चाहिए।

पायल गिट्टे लेकर पहले कृति के पास गई। देखो कृति मेरे पास कितने सुन्दर गिट्टे हैं। आओ

खेलें। वह बोली– नहीं पायल आज मेरे मामा जी आने वाले हैं। मैं घर के काम में मम्मी की सहायता कर रही हूँ।

पायल अब साक्षी के पास पहुँची।– आओ साक्षी गिट्टे खेलें। उसे गिट्टे दिखाती हुई बोली।

साक्षी ने कहा– मैं तो अपने लॉन में पानी लगा रही हूँ; दोपहर को आना।

पायल ने सुरभि को पकड़ा– तू तो मेरी बेस्ट फ्रैंड है न। देख मेरे पास कितने सुन्दर गिट्टे हैं आ खेलें।

सुरभि बोली– न बाबा न; आज हमें नाना जी के यहाँ जाना है। पैकिंग करनी है।

पायल का मुँह लटक गया। वह दो-तीन सहेलियों के पास और गई पर सभी किसी न किसी काम में लगी हुई थीं। उसने सोचा– अब मैं भी मम्मी के साथ काम कराऊँगी। ये गिट्टे रानी तितली को लौटा दूंगी। उसने हाथ उठाकर कहा– तितली रानी ये उपहार मुझे नहीं चाहिए। उसका हाथ किसी ने पकड़ लिया वह चिल्लाई– नहीं। मुझे मत पकड़ो अब मैं तुम्हारी तितलियों को कभी नहीं सताऊँगी। तभी हँसी की आवाज सुनकर उसकी आँख खुल गई। उसने देखा मम्मी उसे हाथ पकड़कर उठा रही है।– उठो पायल! आज सोती ही रहोगी क्या? आज तो तुम्हारी बुआ जी आने वाली हैं।

पायल ने आँखें मलीं। अरे मैं सपना देख रही थी। वह मम्मी से बोली– चलो मम्मी मैं भी आपके साथ काम कराऊँगी।

–कहानी की सत्यता जो भी रही हो परन्तु यह सत्य है कि जो बच्चे वास्तव में अच्छे संस्कारों वाले होते हैं। वे अपने सपनों से भी सीख प्राप्त कर लेते हैं और जो उद्दण्ड संस्कार लिये होते हैं वे सपने में तो क्या जाग्रत रहते हुए भी कुछ नहीं सीख पाते।

❖

बाल गीत : अशोक 'आनन'

काम भलाई का

सूरज अपनी रोशनी देकर,
जग का हरता है अंधियारा।
फूल भी अपनी खुशबू देकर,
महकाता है गुलशन सारा।।

शीतल छाया देकर तरुवर,
हर राही की तपश मिटाते।
पानी बरसाकर धरती पर,
बादल सारी खुशियां लाते।।

दीन-दुखी की सेवा करके,
सज्जन सबको सुख पहुँचाते।
उनको हर सम्मान है मिलता,
दुख में सबके काम जो आते।।

काम भलाई का करने से,
मुझको भी आनंद मिलेगा।
गौरवशाली भारत माँ का,
मस्तक ऊँचा सदा रहेगा।।

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

फूलों की बस्ती

फूलों की बस्ती, गुलशन है सारा,
महका-महका ये, लगता है प्यारा।

रंग-बिरंगी-सी, खिलती हैं कलियां,
सुंदर-सी दिखती, गुलशन की गलियां।

भौरे-तितली भी, भ्रमण को निकले,
डाली फूलों की, संभाले न संभले।

शबनम का इन पर, हुआ है बसेरा,
मोती-सी चमके, होता जब सवेरा।

धूप सलोनी-सी, घूंघट जब खोले,
कोयल मतवाली, मीठी-सी बोले।

मन भाता सबको, आलम ये प्यारा,
फूलों की बस्ती, गुलशन है सारा।

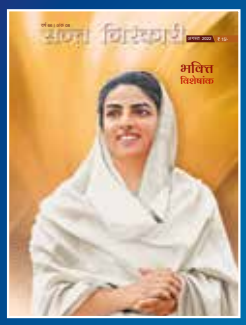

सन्त निरंकारी

ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक

इस पत्रिका में आप पढ़ सकते हैं:

- सत्गुरु वचनामृत
- तर्कपूर्ण लेख
- काव्य प्रवाह
- गीत माधुर्य
- जीवन दर्शन
- बाल वाटिका
- लोकगीत
- नारी शक्ति
- अमृत कलश
- सुनहरी यादें
- पुराने अंकों से

हिन्दी | पंजाबी | अंग्रेजी | मराठी | नेपाली | गुजराती | बांग्ला | तमिल | तेलुगू | कन्नड | ओड़िया

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

'पाक्षिक समाचार पत्र

एक नज़र

स्वयं भी पढ़ें, औरों को भी पढ़ायें

मिशन की सामाजिक/आध्यात्मिक गतिविधियों की जानकारी

- विचार प्रवाह
- दार्शनिक लेख
- प्रेरक प्रसंग
- बाल जगत/खेल जगत
- गीत, कविताएं
- स्वास्थ्य
- नारी जगत

हिन्दी | पंजाबी | मराठी

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

लेख : कमल सौगानी

जंगल के पशु-पक्षी भी किसी डॉक्टर से कम नहीं

प्राकृतिक वातावरण में विचरण करने वाले तमाम विश्वभर में पशु-पक्षी अपना इलाज स्वयं करते हैं। सच पूछा जाये तो बेजुबान पशु-पक्षी भी अपने मस्तिष्क में कई रोगों के बारे में जानकारी रखते हैं। एक तरह से हर पशु-पक्षी अपने आप में एक डॉक्टर भी है।

अपना इलाज खुद पशु-पक्षी कैसे करते हैं? यह खोज क्योटा यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर 'सर हनफनेन' ने की है। उन्होंने एक बीमार जंगली मादा चिम्पाजी चासिकू पर नजर रखी। उन्होंने पाया; अनमनी-सी लगने वाली यह मादा चिम्पाजी जब समूह के साथ चल रही थी तो अचानक रूककर बेवजह एक मर्जोसी वृक्ष की छाल निकालकर उसे मुँह में लेकर चूसने लगी। दूसरे दिन उन्होंने देखा कि वह सामान्य थी और घास, अदरक व अन्य फल खा रही थी।

दरअसल मर्जोसी में कई औषधीय गुण हैं। इस पौधे का उपयोग मलेरिया परजीवी के संक्रमणों और पेट की गड़बड़ियों के लिए किया जाता है। हाँ, जानवरों में उपचार के लिए इस पौधे को चयन करने की प्रकृति स्वाभाविक है।

जंगल के पशु-पक्षी अपना उपचार करने के लिए सही पौधा चुनते हैं। बल्कि वे यह भी जानते हैं कि पौधे का कौन-सा भाग खाना है। ये जो पत्तियां या छाल खाते हैं, वे 'इंटेस्टाईल' में आकर उसमें मौजूद कृमियों को लेकर उत्सर्जन सहित निकल जाते हैं।

दक्षिण अफ्रीकी जंगलों में रहने वाले खूंखार प्रवृत्ति के काले मुँह वाले बन्दर के पेट में जब दर्द होता है तो वह बरकील प्रजाति के पौधे की पत्तियां तोड़कर चबाता है, इससे उसका पेट तुरन्त ठीक हो जाता है। इसी तरह यहाँ के जंगलों में 'लोकिन्स' प्रजाति का सुनहरा गिद्ध रहता है। जब इसके शरीर में ज्यादा दर्द सताने लगता है तो यह 'कोपेरी प्रजाति' के वृक्ष के फूलों को खाता है। इससे उसके शरीर का दर्द दूर हो जाता है।

चीन की 'चिपेरी' जाति की चिड़िया मीठे नीम की पत्तियां खाकर अपना पेट साफ करती है। यहाँ के कुछ पक्षी अपने बदन पर घाव होने पर 'सेल्दू' नामक वृक्ष के फूलों को खाते हैं, इससे उसके घाव शीघ्र सूखने व भरने लगते हैं।

भालू के पाँव में जब दर्द सताने लगता है तो वह शहद खाकर अपना दर्द दूर करता है। इसी तरह शेर के दाँतों में जब कोई बारीक टुकड़े फंस जाते हैं तो वह 'फ्रिकोली' नस्ल की घास चबाकर अपने दाँतों में फंसे टुकड़े निकाल लेता है। दरअसल यह घास खाने से मुँह में सफेद-सफेद झाग होने लगती है। ये झाग चिकनी होती है, इस कारण दाँतों की सफाई अच्छी तरह से हो जाती है।

जंगली सुअर का जब सिरदर्द करने लगता है तो वह ठण्डे पानी में जाकर बैठ जाता है। उसका सिरदर्द दूर होने लगता है। कई आसमानी पक्षियों को जब चक्कर आने लगते हैं तो ये किसी पेड़ पर बैठकर उसके पत्ते सूंघना शुरू कर देते हैं, इससे उन्हें चक्कर आना बन्द हो जाता है।

अजगर जब जरूरत से ज्यादा शिकार निगल लेता है, तो किसी पेड़ के सहारे लिपट जाता है, इससे काफी आराम मिलता है।

❖

रोज खाएं एक सेब
मिटेंगीं कई बीमारियां

कहा जाता है कि एक सेब रोजाना खाने से डॉक्टर आपसे दूर रहता है। सेब में बहुत प्रकार के विटामिन्स, मिनरल्स पाए जाते हैं जो अनेक प्रकार की बीमारियों से आपको बचाते हैं।

नवीन अनुसंधानों से निष्कर्ष मिले हैं कि सेब में जो तत्व मिलते हैं वे गठिया और जोड़ों के दर्द में राहत देते हैं।

सेब में लौह तत्व, मैग्नीशियम, पोटेशियम आदि बहुत से खनिज होते हैं जो हड्डियों की मजबूती के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं।

सेब के बनाए जैम, चटनी व मुरब्बा भी गुणकारी हैं। बस इतना जरूर है कि खाने वाला डायबिटीज मुक्त हो। सेब का जूस भी लाभकारी है। सेब का सिरका हृदय के ब्लॉकेज खोलने में गुणकारी है। सेब का सिरका अदरक का रस और नीबू का रस लेकर एक चम्मच शहद मिलाकर सुबह खाली पेट पियें। सभी रसों को एक-एक छोटे चम्मच लिया जा सकता है। आप अदरक का रस, लहुसन का रस, नीबू का रस, सेब का सिरका और शहद मिलाकर शीशी में रख सकते हैं। रोजाना सुबह-शाम एक-एक चम्मच पीने से हृदय की तकलीफें समाप्त होती हैं। जाड़े के मौसम में चाहें तो गुनगुने पानी में इन रसों को मिलाकर भी ले सकते हैं। वैसे बगैर पानी के यह ज्यादा लाभकारी है।

प्रस्तुति : डॉ. ऋषि मोहन श्रीवास्तव

लोककथा : विद्या प्रकाश

जब जानवर गुलाम हुआ

बात उन दिनों की है; जब जंगल में पशु-पक्षी सब आपस में मिल-जलुकर रहा करते थे। कोई किसी का गुलाम न था और न मनुष्य मवेशियों और जानवरों को खूंटे में बांधकर रखता था। सभी जानवर और पखेरू जंगल में रहकर मीठे-मीठे फलों का स्वाद लेते तथा तालाब का मीठा-मीठा निर्मल जल पेट भर पीकर आराम से सोये रहते अथवा इधर-उधर स्वच्छंद विचरण करते। हवा में कुलांचे भरते और प्रकृति की मनोरम छटा का आनन्द लेते।

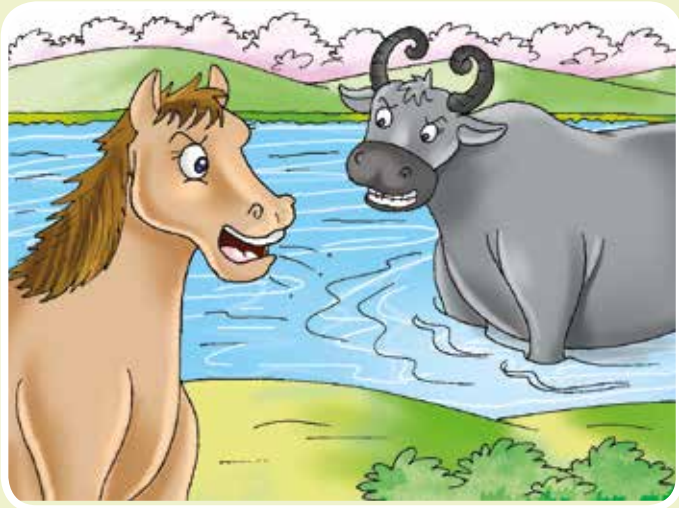

गर्मी के मौसम में एक दिन प्यास से बेहाल भैंस और घोड़ा तालाब के घाट पर पानी पीने आये। भैंस घुटनों तक तालाब में घुसकर पानी पीने लगी जिससे कुछ दूर तक पानी गंदा और मटमैला हो गया। घोड़े को यह बुरा लगा। उसने तालाब का पानी गंदा कर देने पर भैंस को

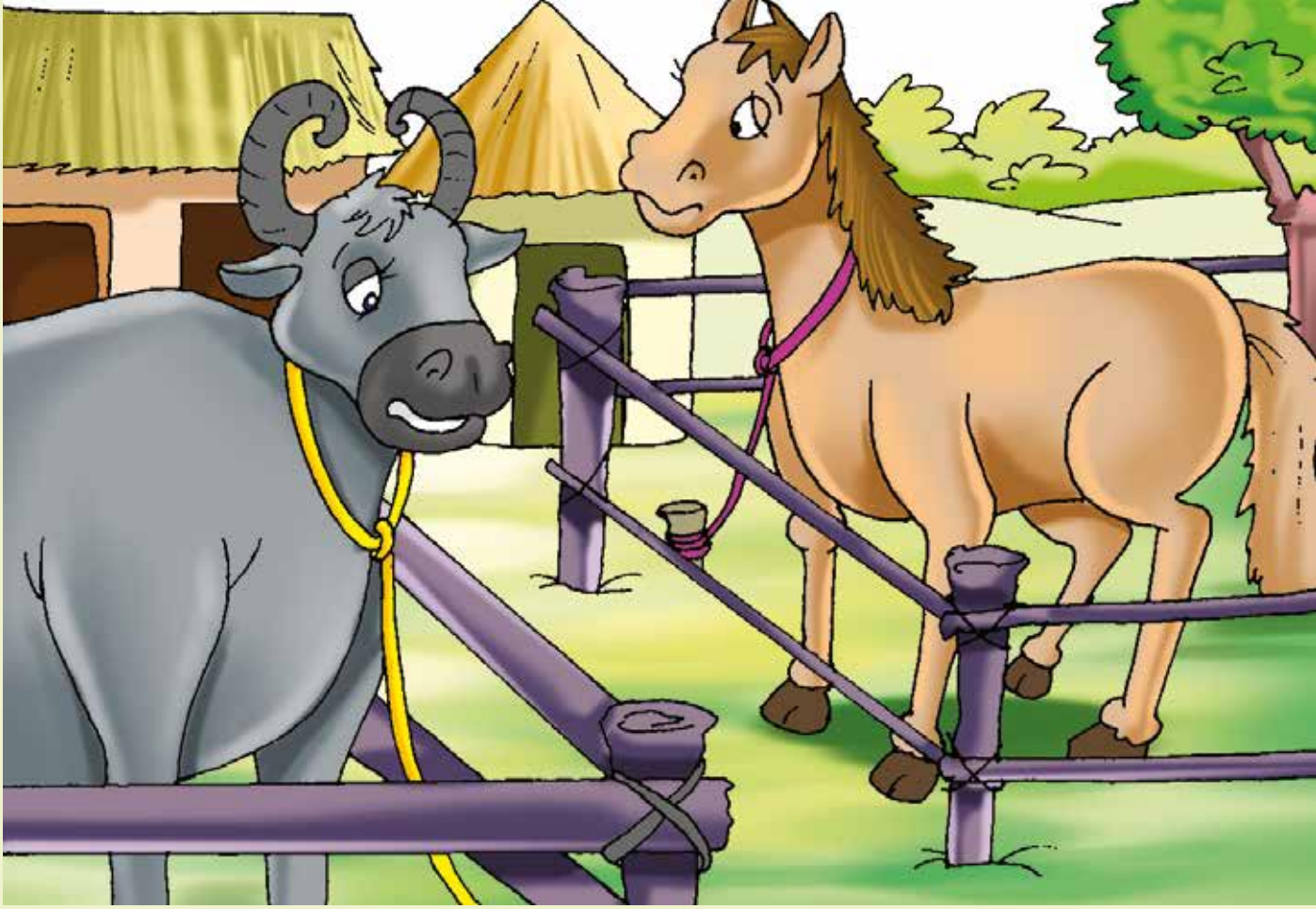

फटकारते हुए कहा– मैं अब कैसे पानी पीऊँ? तू क्या घाट से दूसरी तरफ जाकर पानी नहीं पी सकती थी या अगर पीना ही था तो क्या जरूरत थी पानी के अन्दर घुसने की। जरा पीछे हटकर पानी नहीं पी सकती थी तू?

भैंस ने बिगड़कर जवाब दिया– क्या तालाब तेरे बाप की जागीर है? तालाब सार्वजनिक है और सबको इसका पानी पीने का हक है। मैं चाहे जैसे पीऊँ तू कौन होता है बोलने वाला? वाद-विवाद में बात काफी हद तक बढ़ गयी। गुस्से में नथुना फुलाता हुआ घोड़ा दौड़ा-दौड़ा आदमी के पास आया और बोला– भैंस बददिमाग होती जा रही है। आज उसने मेरे साथ ज्यादती और बदतमीजी की है। कल तुम्हारे साथ भी कर सकती है। क्यों नहीं तुम रस्सी लेकर चलते और उसे बांध देते?

–लेकिन अब तो वह काफी दूर निकल गयी होगी।– आदमी बोला।

–मेरी पीठ पर आकर बैठ जाओ। मैं तुम्हें सरपट घाट तक लिये चलता हूँ।– घोड़े ने कहा।

भैंस तालाब से निकलकर अधिक दूर नहीं गयी थी। आदमी उसे रस्सी में बांधकर घर ले आया। उसने घोड़े को भी नहीं छोड़ा। उसकी सवारी के सुख का स्वाद उसे मिल चुका था। वह घोड़े की सवारी का लुत्फ लेता और भैंस का दूध दुहकर पीता। उसके दिन आराम से गुजरने लगे। तब से आदमी जानवरों को अपना गुलाम बनाकर रखने लगा। ❖

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन : विकास कुमार

बेटा अभी तो मैंने मैगी बना दी है। पर यह सेहत के लिए अच्छी नहीं है।
अरे मम्मी मुझे कुछ नहीं होगा।
किट्टी तुम अपना टिफिन क्यों नहीं खा रही?
मुझे घर का खाना अच्छा नहीं लगता मैं तो बर्गर खाऊंगी।
किट्टी हमें घर का बना खाना ही खाना चाहिए।
मोंटू बर्गर बहुत स्वादिष्ट है। तुम सबको भी बर्गर खाना चाहिए।

किट्टी अब तुम मोमोज़ खा रही हो? तुमने लंच में भी बर्गर खाया था।
चिंटू तुम्हें नहीं खाना तो मत खाओ। मुझे तो खाने दो।
किट्टी ये लो खाना खा लो।
छी पालक, मुझे नहीं खाना, खाना।
किट्टी ऐसा नहीं बोलते। पालक तो अच्छी होती है।
किट्टी मैं तो तुम्हारे लिए दूध लाई थी। तुम चॉकलेट खा रही हो।
नहीं मम्मी, चॉकलेट मेरी फेवरेट है। मैं इसे खाऊँगी।

आह! मम्मी, मेरे दांत में दर्द हो रहा है।
किट्टी मैंने तुम्हें मना किया था न चॉकलेट और मैगी खाने से। अब हो गया न दर्द। मैं डॉक्टर को बुलाती हूँ।
आह! मेरे पेट में भी दर्द हो रहा है।
किट्टी, तुमने कल खाया क्या था?
डॉक्टर साहब, यह घर का खाना नहीं खाती है। बाहर की चीजें ज्यादा खाती है।
मैंने तो चॉकलेट, बर्गर और मोमोज़ खाये थे।
किट्टी, इतना जंक-फूड नहीं खाना चाहिए। ये स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। अब मैं तुम्हें इंजेक्शन लगाऊंगा।
डॉक्टर अंकल, मुझे इंजेक्शन मत लगाना अब मैं जंक-फूड और चॉकलेट नहीं खाऊंगी। हरी सब्जियां और घर का खाना ही खाऊंगी।

संग्रहकर्ता : महन्थ राजपाल (जौनपुर)

कभी न भूलो

- जो बालक परिश्रम करते हैं, वे सदा सफल होते हैं। इस बात को याद रखो, जब तक तुम कठिन परिश्रम करना नहीं सीखते तब तक तुम्हें सफलता की आशा नहीं करना चाहिए। सफलता के लिए दृढ़-निश्चय और कठिन परिश्रम की आवश्यकता है। **– सुक्ति**
- सदा सत्य बोलो। झूठ बोलने वालों का लोग तिरस्कार करते हैं। **– स्वामी शरणानन्द**
- विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र हैं। **– बनार्ड शॉ**
- निकृष्ट साधनों से उत्कृष्ट फल की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती। शुद्ध उद्देश्य के लिए साधन भी शुद्ध होने चाहिए। **– आचार्य विरेन्द्र देव**
- अधिक धन होने पर भी जो चिंतित है। वह सबसे बड़ा निर्धन है। कम धन रहने पर भी जो संतुष्ट रहता है वही सबसे बड़ा धनी है। **– अश्वघोष**
- बीती बात के लिए शोक तथा भविष्य के लिए निरर्थक चिन्ता न करके वर्तमान के लिए प्रयत्नशील रहने वाला ही ज्ञानी है। **– चाणक्य**
- जो मनुष्य खूब सोच-विचार कर काम करता है। आरम्भ किये काम को बिना समाप्त किये नहीं छोड़ता किसी भी समय काम करने से मुँह नहीं मोड़ता। वही परिश्रमी और समग्र व्यक्तित्व का धनी है। **– विदुर**
- यदि आप चाहते हो कि अच्छे लोग तुमसे घृणा न करें तो शिष्टाचार के नियमों का सावधानी से पालन करो।
- जब दूसरे गलतियां करते हैं तो उनको गिनते न रहिए, उनका विश्वास जीतिए ताकि आप उनकी कमजोरियों को मिटाने में सहयोग दे सकें।
- किसी भी व्यक्ति को तीन चीजें हमेशा अपने हृदय में संजोकर रखनी चाहिए– नम्रता, दया और क्षमा।
- सफलता का एक ही मंत्र– पक्का इरादा, दूरदृष्टि, कड़ी मेहनत और अनुशासन।
- आलस्य करने से प्राप्त किया गया ज्ञान भी शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।
- जो जल्दी सोता है और जल्दी उठता है, वह स्वस्थ, सम्पन्न और मेधावी होता है।
- आचरणरहित विचार कितने अच्छे क्यों न हों, उन्हें खोटे मोती की तरह समझना चाहिए।
- जैसे शरीर के लिए व्यायाम जरूरी है, वैसे ही मन के लिए स्वाध्याय जरूरी है।
- प्रसन्न रहने के दो ही उपाय हैं, आवश्यकताएं कम करें और परिस्थितियों से तालमेल बिठाएं।
- न तो समय को नष्ट कीजिए और न दौलत को, बल्कि दोनों का सर्वोत्तम उपयोग कीजिये। **– लोकोक्ति**

विनम्रता की ताकत

प्रेरक-प्रसंग :
दिनेश दर्पण

एक बार नदी को अपने प्रचंड प्रवाह पर घमंड हो गया। नदी को लगा कि मुझमें इतनी ताकत है कि मैं पत्थर, मकान, पेड़, पशु, मानव आदि सभी को बहाकर ले जा सकती हूँ। नदी ने बड़े ही गर्वीले और अभिमानपूर्वक शब्दों में समुद्र से कहा– बताओ, मैं तुम्हारे लिए क्या बहाकर लाऊँ? जो भी तुम चाहो मकान, वृक्ष, पत्थर, पशु, मानव आदि जो तुम चाहो। उसे मैं जड़ से उखाड़कर ला सकती हूँ।

समुद्र समझ गया कि नदी को अहंकार हो गया है। उसने नदी से कहा– यदि तुम मेरे लिए कुछ लाना ही चाहती हो तो थोड़ी-सी दूबघास उखाड़कर ले आओ।

समुद्र की बात सुनकर नदी बोली– बस! इतनी सी बात है। अभी आपकी सेवा में हाजिर करती हूँ। नदी ने अपने जल का पूरा वेग घास को उखाड़ने के लिए लगाया पर घास नहीं उखड़ी। नदी ने एक बार, दो बार, तीन बार ... अनेक बार जोर लगाया। सभी प्रयत्न किये पर बार-बार प्रयत्न करने पर भी कोई सफलता नहीं मिली। आखिर हारकर समुद्र के पास पहुँची और बोली– मैं मकान, वृक्ष, जीव-जन्तु तो बहाकर ला सकती हूँ पर घास को उखाड़कर नहीं ला सकती। जब भी मैंने घास उखाड़ने के लिए पूरा वेग लगाकर उसे उखाड़ने का प्रयास किया तो वह नीचे की ओर झुक जाती है और मैं खाली हाथ उसके ऊपर से गुजर जाती हूँ।

समुद्र ने नदी की पूरी बात सुनी और कुछ देर विचार किया और फिर मुस्कुराते हुए बोला– जो पत्थर या वृक्ष जैसे कठोर होते हैं, वे आसानी से उखड़ जाते हैं किन्तु दूबघास जैसी विनम्रता जिसने सीख ली हो उसे कोई प्रचंड वेग भी उखाड़ नहीं पाता।

नदी ने समुद्र की सारी बातें धैर्यपूर्वक सुनी और समझीं। समझ में आने पर नदी का घमंड चूर-चूर हो गया।

❖

अनूठी गुरु दक्षिणा

आज उनकी शिक्षा पूरी हो गई थी और सब शिष्य अपने घरों की तरफ प्रस्थान करने वाले थे। महामुनि अगस्त्य के सामने पहुँचकर एक शिष्य ने प्रणाम किया और बड़े आदर से पूछा– गुरुदेव, मैं गुरु दक्षिणा के रूप में क्या भेंट करूं? शिष्य का नाम सुतीक्ष्ण था।

गुरुदेव ने कहा– तुम्हारी प्रतिभा से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। वत्स! तुम्हें देने की कोई आवश्यकता नहीं है परन्तु शिष्य के पुनः आग्रह करने पर वह बोले– कभी भगवान श्रीराम को लाकर मुझे भेंट कर देना।

शिष्य ने गुरुदेव का आदेश सुनकर वन में ही कुटिया बना ली। वह हर समय श्रीराम की ही उपासना करने लगा।

वनवास के दौरान संयोग से कुछ दिन बाद श्रीराम सीता जी व लक्ष्मण के साथ उधर ही आ गये। सुतीक्ष्ण ने उठकर उनका स्वागत किया। श्रीराम जी सुतीक्ष्ण के तपस्वी जीवन से प्रभावित हुए। भगवान बोले– मुनिवर, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ? जो चाहे मांग लो। मैं अति प्रसन्न हूँ।

सुतीक्ष्ण ने कहा– भगवान यदि आप मुझे कुछ देना चाहते हैं तो मेरे गुरुदेव अगस्त्य जी के आश्रम को अपने चरणों से पावन करने की कृपा करें।

श्रीराम स्वयं महात्मा अगस्त्य के दर्शन के आकांक्षी थे। वह चुपचाप सुतीक्ष्ण के पीछे चल दिये। मुनि अगस्त्य के आश्रम में पहुँचकर सुतीक्ष्ण ने कहा– लो गुरुदेव, मैं श्रीराम को आपके पास ले आया हूँ।

मुनिश्रेष्ठ की आँखों में भगवान के दर्शन करके अविरल आंसुओं की धारा बह चली वह अनूठी दक्षिणा पाकर धन्य हो गये। ❖

आश्चर्यजनक सत्यता

- ❖ कोई भी कैलैण्डर तीस साल बाद पुनः इस्तेमाल कर सकते हैं।
- ❖ सदैव एक अक्टूबर को वही दिन होगा जो एक जनवरी को।
- ❖ सदैव एक अप्रैल को जो दिन होगा वही दिन एक जुलाई को होगा।
- ❖ फरवरी, मार्च और नवम्बर मास प्रतिवर्ष एक ही दिन से शुरु होते हैं।
- ❖ शक सम्वत् का प्रारम्भ कनिष्क ने किया।
- ❖ अर्जेंटीना की राजधानी व्यूनस आयर्स में जनवरी माह में गर्मी पड़ती है।
- ❖ उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों पर क्रमशः 6 महीने की रात और 6 महीने का दिन होता है।
- ❖ दुनिया की पहली सुबह और शाम न्यूजीलैण्ड में होती है।
- ❖ नार्वे में जून और जुलाई भर सूर्यास्त नहीं होता।
- ❖ वर्ष का सबसे छोटा दिन 22 दिसम्बर और सबसे बड़ा दिन 21 जून है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

बाल कविता : राहुल

पाठ पढ़ाते तारे?

अंधियारी रातों में तारे,
लगते कैसे प्यारे-प्यारे।

भरे थाल में हीरे-मोती,
ऐसे लगते न्यारे तारे।
शान्त गगन में जगमग करते,
लगते ज्यों हरकारे तारे।।

यदि उदास हो मन हमारा,
आशा किरण जगाते तारे।
सदा प्रेम से हिलमिल रहते,
प्रेम का पाठ पढ़ाते तारे।।

किरण

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

मैं सूरज की पहली किरण,
सबसे पहले आ डालूं डेरा।
देख मेरी कंचन सी काया,
होता फिर से नया सवेरा।।

चीर के कोहरे की चादर,
रूप दिखाती धरती पर मेरा।
संग मेरे आते सूरज दादा,
धूप लगाती दिन में फेरा।।

मुझे देख खिल जाते उपवन,
ताजा लगता फूलों का चेहरा।
पंछी निकलते अपने घर से,
दूर हो जाता सकल अंधेरा।।

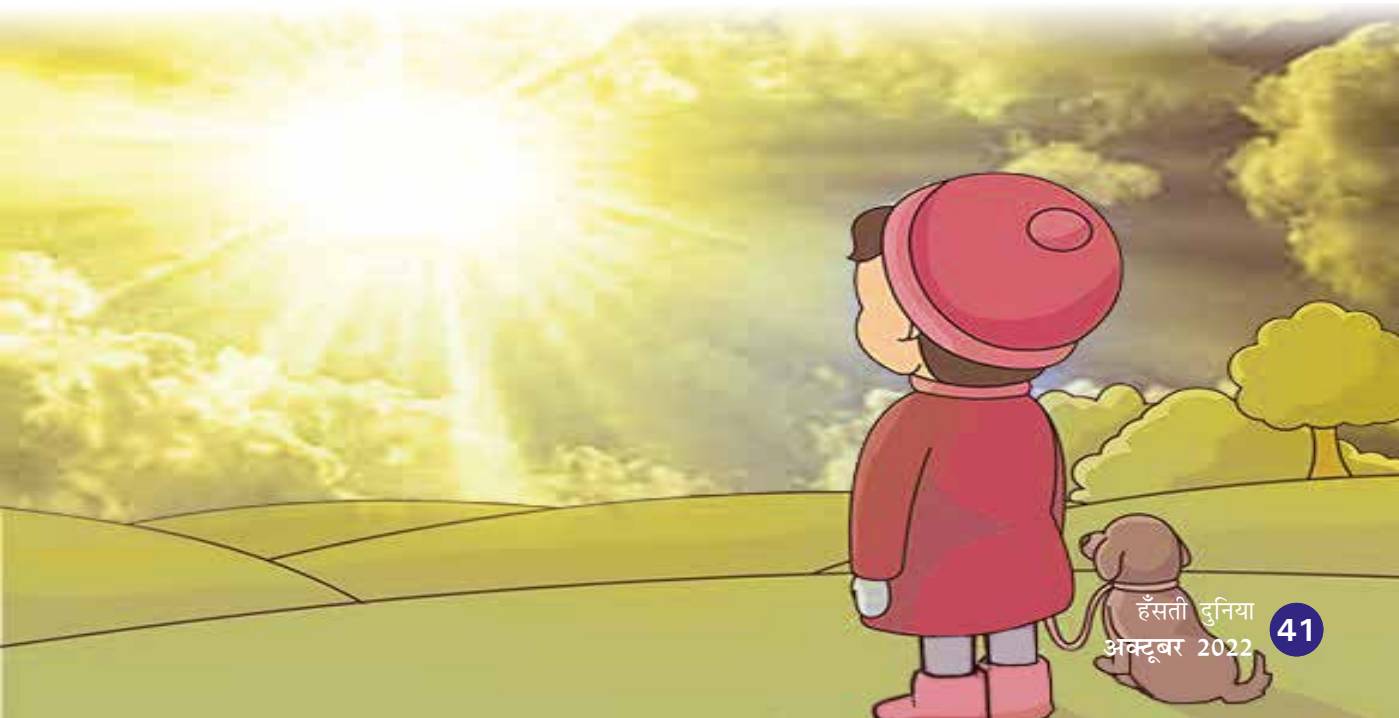

लेख : परशुराम शुक्ल

प्रकृति का अभिनव चमत्कार

सफेद शेर

शेर से हम सभी परिचित हैं। यह भारत का राष्ट्रीय पशु है। शेर केवल एशिया में पाया जाता है। इसकी कुल आठ प्रजातियां हैं। यह हैं– साइबेरिया का शेर, मंचूरिया का शेर, ईरानी शेर, भारतीय शेर, चीनी शेर, सुमात्रा का शेर, जावा का शेर और बाली का शेर। इनमें भारतीय शेर (रायल बंगाल टाइगर) सबसे सुन्दर होता है। यह पंजाब, कश्मीर और राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्रों को छोड़कर पूरे भारत में पाया जाता है।

इस बात को बहुत कम लोग जानते हैं कि भारत में एक अद्‌भुत शेर भी पाया जाता है– सफेद शेर। सफेद शेर की संरचना, आकार, आदतें और व्यवहार आदि सामान्य शेरों की तरह होता है किन्तु इसका रंग क्रीम की तरह सफेद होता है तथा इसके शरीर पर भूरे रंग की धारियां होती हैं। सफेद शेर एक दुर्लभ वन्य जीव है। इसे केवल कुछ विशेष अभयारण्यों और चिड़ियाघरों में ही देखा जा सकता है।

सफेद शेर की खोज का श्रेय भूतपूर्व रीवा नरेश महाराज मार्तण्ड सिंह जूदेव को है। वे वन्य जीवों का शिकार करने के स्थान पर उन्हें संरक्षण देना अधिक पसन्द करते थे।

25 मई, 1951 की बात है। देवा गाँव के एक किसान ने महाराज मार्तण्ड सिंह को सूचना दी कि उसने बरगढ़ी के जंगलों में शेर का एक अद्‌भुत बच्चा देखा है जो क्रीम की तरह सफेद रंग का है। महाराज ने तुरन्त शिकार अभियान की तैयारी की और अगले दिन ही बरगढ़ी के जंगलों में शिकारियों के कैम्प लग गये।

बरगढ़ी के जंगल सीधी जिले की गोपद

बनास तहसील के अन्तर्गत आते हैं। महाराज मार्तण्ड सिंह के साथियों ने 27 मई, 1951 की सुबह सफेद शेर को जन्म देने वाली शेरनी को ढूंढ निकाला। शेरनी अपने चार बच्चों के साथ थी। उसके तीन बच्चे तो शेर के सामान्य बच्चों की तरह थे किन्तु चौथा बच्चा बड़ा अद्‌भुत था। उसका रंग क्रीम की तरह सफेद था और उस पर भूरे रंग की धारियां थीं। उसकी आँखें आसमानी नीले रंग की थीं। महाराज मार्तण्ड सिंह ने इस शेर शावक को देखा तो देखते ही रह गये। महाराज मार्तण्ड

सिंह इस बच्चे को अपने साथ गोविन्दगढ़ ले आये और उन्होंने इसे नाम दिया– मोहन।

भारत में सफेद शेर की उपस्थिति ने विश्वभर को चौंका दिया। इसके बाद तो गोविन्दगढ़ पर्यटकों का केन्द्र बन गया। इस स्थान पर दूर-दूर के लोग मोहन को देखने के लिए आने लगे।

महाराज मार्तण्ड सिंह वन्य जीवों के प्रेमी तो थे ही उन्हें मोहन और उसके दर्शकों ने इतना प्रभावित किया कि कुछ समय बाद उन्होंने सफेद शेरों का विकास करने का निश्चय किया। मोहन और राधा नाम की शेरनी की जोड़ी ने पहली बार 30 अक्टूबर, 1958 को चार बच्चों को जन्म दिया। ये चारों बच्चे मोहन की तरह ही क्रीम जैसे सफेद थे। इसके बाद इसी जोड़े से 29 सफेद शेर पैदा हुए।

सन् 1960 भारत में हुए विश्व कृषि मेले में संयुक्त राज्य अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति आइजनहोवर पधारे। उनके आग्रह पर भारत से सफेद शेरों का जोड़ा पहली बार अमेरिका पहुँचा। इसके बाद सन् 1963 में इंग्लैंड के ब्रिस्टल वन्य प्राणी पार्क में सफेद शेरों का दूसरा जोड़ा 'चम्पा-चमेली' भेजा गया। इसके बाद कुछ अन्य देशों में भी सफेद शेर भेजे गये। भारत में भी लोग सफेद शेर देखने के लिए लालायित थे। अतः देश के कुछ महत्वपूर्ण चिड़ियाघरों में भी सफेद शेर भेजे गये।

❖

पढ़ो और हँसो

ग्राहक : सेब क्या भाव है?
फलवाला : दो सौ रुपये किलो। खरीदने हैं क्या?
ग्राहक : खरीदने नहीं सिर्फ सूंघने हैं।

बेटा : पापा, गुलाब का पौधा लगाए एक हफ्ता हो गया है पर अभी तक उसकी जड़ें नहीं निकलीं।
पिता : लेकिन बेटे, तुम कैसे जानते हो?
बेटा : क्योंकि मैं रोज उसे उखाड़कर देखता हूँ।

यात्री : (तांगेवाले से) स्टेशन तक का कितना लोगे?
तांगेवाला : पचास रुपये और सामान मुफ्त ले चलूंगा।
यात्री : अच्छा तो सामान ही ले चलो। मैं पैदल आता हूँ।

महिला : (दुकानदार से) सूती साड़ी देना।
दुकानदार : (नौकर से) बनारसी साड़ी देना।
महिला : भाई साहब, बनारसी नहीं सूती साड़ी चाहिए।
दुकानदार : मैडम, सूती साड़ी ही दूंगा। बनारसी तो नौकर का नाम है।

बस कंडक्टर : केवल 12 वर्ष से कम के बच्चे ही आधे टिकट पर यात्रा कर सकते हैं।
एक लड़का : मैं 11 वर्ष, 11 महीने और 29 दिन का हूँ।
बस कंडक्टर : तुम्हारा 12वां वर्ष कब पूरा होगा?
लड़का : जब मैं बस से उतरूंगा तब।

एक मकान मालकिन का कुत्ता मर गया। मालकिन बहुत जोर-जोर से रो रही थी। बगल में बैठी नौकरानी भी मालकिन से ज्यादा विलाप कर थी। मालकिन ने चुप होकर नौकरानी से पूछा– कुत्ता मेरा मरा है लेकिन तुम तो मुझसे भी अधिक रो रही हो, ऐसा क्यों?

क्योंकि अब सारे बर्तन मुझे अकेले ही साफ करने पड़ेंगे।– नौकरानी ने जवाब दिया।

सेठ साहब : (नौकर से) श्यामू जरा यह बिजली का तार पकड़ना।
नौकर : (झटका लगने के बाद) मालिक इसमें तो करंट है।
सेठ साहब : ठीक है श्यामू मैंने यही मालूम करना था।

एक साइकिल वाला साइकिल पर जा रहा था कि अचानक उसकी टक्कर निखिल से हो गई।

निखिल : अरे भई! घंटी देकर साइकिल चलाया करो।

साइकिल वाला : अरे वाह! अगर घंटी तुम्हें दे दूंगा तो बजाऊँगा क्या?

सोहन : (मोहन से) यार, मुझे कल तक सौ रुपये उधार दे दो।

मोहन : नहीं, मैं रुपये उधार नहीं देता हूँ।

सोहन : तो फिर नगद ही दे दो।

एक आदमी अपने साथी से बोला– मैंने अपने पहले लड़के का नाम 'अंतरंजन' रखा है और दूसरे का नाम 'संतरंजन' रखा है। अब तीसरे का क्या रखें।

–तुम तीसरे का नाम 'दंतमंजन' रख दो।

–उसके साथी ने सलाह दी।

बस कंडक्टर : (यात्री से) इतनी जगह पड़ी है, आप बैठ क्यों नहीं जाते?

यात्री : मैं यहाँ बैठने नहीं आया हूँ, मुझे घर जल्दी पहुँचना है।

अध्यापक : (छात्रों से) बच्चों! अगर तुम अपनी आँखें बन्द कर लोगे तो तुम्हें कुछ भी दिखाई नहीं देगा।

छात्र : सर! आंखे बन्द करने पर मुझे अंधेरा दिखाई दे रहा है।

सेठ : (नौकर से) तुमने लेटर बॉक्स में खत डाल दिया?

नौकर : नहीं सेठजी।

सेठ : क्यों नहीं डाला?

नौकर : कैसे डालता? हर लेटर बॉक्स के बाहर ताला लगा था।

भिखारी : ले बेटा लॉटरी का टिकट। लॉटरी में अपनी कार निकलेगी।

बेटा : (खुशी से) फिर तो पिताजी, हम लोग कार में बैठकर भीख मांगने जाएंगे।

मकान मालिक : (बिल्डर से) नीचे वाले मकान का हिस्सा कितने में बनेगा?

बिल्डर : बीस लाख में।

मकान मालिक : और ऊपर वाली मंजिल?

बिल्डर : दस लाख में।

मकान मालिक : तो ऐसा करो, तुम पहले ऊपर वाली मंजिल बना दो।

पत्नी : (वैज्ञानिक पति से) अजी सुनिये।

पति : क्या है?

पत्नी : 'पानी बचाओ' संगोष्ठी में मत जाइएगा।

पति : क्यों?

पत्नी : चाँद पर पानी मिल गया है।

– सोनी निरंकारी (खलीलाबाद)

बोधकथा : महेन्द्र सिंह शेखावत

महान् कौन?

दीपावली का समय। चारों ओर दीपक ही दीपक झिलमिला रहे थे। तभी उनमें से एक दीपक बोला– ''देखो, मैं अंधेरे को दूर करके प्रकाश फैला रहा हूँ।''

इतना सुनते ही दीपक में जल रही बत्ती बोली, ''दीपक भैया, प्रकाश तो मैं फैला रही हूँ, देख लो मैं ही जल रही हूँ।''

बत्ती की बात सुनकर तेल झट से बोल पड़ा– ''बत्ती, तुम भी मेरे बिना नहीं जल सकती। तुम मेरे माध्यम से ही जलकर प्रकाश फैला रही हो, इसलिए तुम से मैं महान् हूँ।''

इस प्रकार तीनों आपस में बहस करने लगे।

दीपक कहने लगा– ''मैं महान् हूँ, मेरे बिना तुम्हारी कोई सार्थकता नहीं, तो तेल और बत्ती भी अपने आपको महान् कहने लगे।''

उनकी बातें सुनकर मिट्टी बोली– ''दीपक, तुम महान् हो क्योंकि तुमने तेल और बत्ती दोनों को आश्रय दे रखा है, लेकिन मेरे बिना तुम्हारा भी अस्तित्व नहीं हो सकता। इसलिए अपनी-अपनी जगह सभी का महत्व होता है और अपनी-अपनी जगह सभी महान् होते हैं। यदि हम सब आपस में एक-दूसरे का सहयोग न करें तो यह प्रकाश उत्पन्न नहीं हो सकता। प्रकाश के लिए हमारा आपस में सहयोग नितांत आवश्यक है।

अब मिट्टी की बात सुनकर सब चुप हो गये थे। ❖

प्रेरक-प्रसंग : गौरीशंकर कुमार

महानता

अंग्रेजी के प्रकाण्ड विद्वान इंग्लैंड निवासी थॉमस कूपर आठ वर्षों के अपने अथक और कठिन परिश्रम के बाद अंग्रेजी के विशालतम शब्दकोष का लगभग दो तिहाई भाग तैयार कर चुके थे।

एक दिन जब वे घर के बाहर जाने लगे तो उनकी पत्नी ने उन्हें बाजार से लाने योग्य सामान की सूची दी और बोली कि वे सूची की सामग्री अवश्य लेते आयें। किन्तु कूपर को भला घर की सामग्री का ध्यान कहाँ होता?

जब वे शाम को खाली हाथ लौटे तो उनकी पत्नी क्रोध से बिफर उठी और उनके द्वारा तैयार किये गये शब्दकोष को चूल्हे में झोंक दिया।

जब पत्नी ने अपने कारनामे कूपर को सुनाये तो वे मुस्कुराकर बोले– कोई बात नहीं, मैं स्वयं भी शब्दकोष में कुछ संशोधन करने का विचार कर रहा था। हाँ, इतना जरूर है कि अब आठ वर्ष पुनः परिश्रम करना पड़ेगा।

जो हो गया उसे हम बदल तो नहीं सकते। उसको स्वीकार तो करना ही पड़ता है। कोई हँसकर स्वीकार करता है तो कोई रोकर करता है। ❖

पहेलियों के उत्तर :

1. सूरज, 2. पृथ्वी, 3. नीलआर्मस्ट्रांग, 4. पानी, 5. ब्लीचिंग पाउडर, 6. कैथोड किरणें, 7. क्लोरीन, 8. बिजली, 9. वायुमंडल, 10. प्रदूषण

कविता : डॉ. गोपालदास नायक

स्वच्छता अभियान

गली-गली में भोर पुकारे,
स्वच्छता का अभियान है।
रिश्ते नाते बाद में आये,
पहले स्वच्छ का ध्यान है।।

पग-पग पर कूड़ा करकट दे,
पल-पल में बीमारी भर दे।
करे सफाई आसपास की,
स्वस्थ जीवन का मान है।।

पर्यावरण भी यही पुकारे,
स्वच्छता भी यही हुंकारे।
बच्चे बूढ़े हर जन मन है,
जागरुकता का अभिमान है।।

आओ सब मिल करे सफाई,
न जाति न धर्म की खाई।
बस अपना हो एक ही नारा,
स्वच्छता में ही सम्मान है।।

बाल कविता : बलतेज 'कोमल'

वृक्ष

वृक्ष हमारे लिये वरदान।
कुदरत की ये भेंट महान।

चले पवन यह महक बिखेरें,
कुछ देने से मुँह न फेरें।
पक्षियों के लिए मकान,
वृक्ष हमारे लिये वरदान।।

देते फल, लकड़ी व छाया,
दानवीर है इनकी काया।
हैं सबके लिए मेहरबान,
वृक्ष हमारे लिये वरदान।।

करते कुदरत का श्रृंगार,
धरती जाती है बलिहार।
ऑक्सीजन की उत्तम खान,
वृक्ष हमारे लिये वरदान।।

मत लगाना काट कर ढेर,
इनके बिन जीवन अंधेर।
मत बनना मूर्ख नादान,
वृक्ष हमारे लिए वरदान।।

जुलाई अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **पायल** 15 वर्ष
   चमन विहार,
   लोनी, गाजियाबाद (उ.प्र.)

2. **अनुष्का** 14 वर्ष
   चमन विहार,
   लोनी, गाजियाबाद (उ.प्र.)

3. **अम्बर लाम्बा** 10 वर्ष
   412, बी-12, अभिनव अपार्टमेंट,
   वसुंधरा एंक्लेव, दिल्ली

4. **यशिका पंजवाणी** 13 वर्ष
   झूलेलाल सोसाइटी, भुरावाव चार रास्ता,
   एफसीआई गोदाम के सामने,
   गोधरा (गुजरात)

5. **नम्रता** 14 वर्ष
   अरसिया बाजार, शाहगंज,
   जिला : जौनपुर (उ.प्र.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

अनमोल (मंडी डबवाली, सिरसा), आरूषि (सेक्टर-56, चंडीगढ़), आलिया (उरैन, लखीसराय), पान्या (आवास विकास कॉलोनी, अलीगढ़), ममता, कल्पना, दीप्ति, विशाल, अर्चना पाल, पीहू, थलिष्का, रवि, रितु, पूजा, मुक्ता, आयुष, अनुष्का, अनमोल, श्रेया, टीटू, कार्तिक, (चमन विहार, गाजियाबाद), रेशमा रामचंदानी, मुस्कान लालवाणी, प्रियंका, प्राची विशाखा राजाई, मंथन, सुमित, मुस्कान रूपाणी, ओम, नंदनी, कृष्णा, ओम, लहर, नैतिक, चांदनी, लव मूलचंदानी, शिव, अनंत बम्बाणी, निश्किा, रोशनी, जय, कार्तिक मनवाणी, डिम्पल, आर्या हेमराजानी (गोधरा)।

अक्टूबर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर **10 नवम्बर** तक कार्यालय **'हँसती दुनिया'**, निरंकारी कॉम्पलेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **जनवरी 2023 अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

आपके पत्र मिले

हम हँसती दुनिया के नियमित पाठक हैं। हमें यह बाल पत्रिका बहुत ही अच्छी लगती है तथा हम इसे बड़े चाव से पढ़ते हैं। हमें इस पत्रिका में 'कभी न भूलो' और 'पढ़ो और हँसो' बहुत पसन्द हैं।

इसमें प्रकाशित कहानियां हमें अच्छी बातें समझाती हैं तथा मनभावन कविताएं हमारे मन को लुभाती हैं। इस पत्रिका से बच्चों का सही मार्गदर्शन व मानसिक विकास होता है।

– रानी-जवाहर (निरंकारी कालोनी, दिल्ली)

हमारी प्यारी हँसती दुनिया आती है तो ढेर सारी कहानियां, कविताएं और जानकारियां लाती हैं। सारी ही पत्रिका हम बड़े चाव से पढ़ते हैं।

हँसती दुनिया पढ़कर सत्य बोलने व माता-पिता का कहना मानने व बड़ों का आदर करने की प्रेरणा मिलती है। भगवान करे यह पत्रिका और अधिक तरक्की करे।

– समदीक्षा (इन्द्रलोक, दिल्ली)

जीवन का हर पल खुशियों से भरने वाली यह बाल पत्रिका सभी को एक नया मार्गदर्शन देती है यह पत्रिका बड़े लोगों को भी बहुत प्रिय है। यह पत्रिका कहानियों द्वारा शिक्षा भी प्रदान करती है।

मुझे इसमें कहानियां और कविताएं अच्छी लगती हैं। **– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)**

मैं हँसती दुनिया की पुरानी पाठक हूँ। मुझे यह पत्रिका बहुत अच्छी लगती है। इसमें प्रकाशित 'कभी न भूलो' तथा कहानियां ज्ञानवर्द्धक होती हैं। मेरी इस पत्रिका को शुभकामना है कि यह पत्रिका इसी तरह हमारा ज्ञानवर्द्धन करती रहे।

– कमलकान्त (मुम्बई)

मैं हँसती दुनिया का पुराना सदस्य हूँ। इस पत्रिका को मैं बड़े चाव से पढ़ता हूँ। हँसती दुनिया से बच्चों का बौद्धिक विकास होता है। मैं अपने भाईयों के बच्चों को तथा पड़ोसियों को भी पढ़ाता हूँ। **– दीपक (उज्जैन)**

मुझे हँसती दुनिया पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। हम हँसती दुनिया को बड़े चाव से पढ़ते हैं।

इसमें मुझे कविताएं, कहानियां, कभी न भूलो और अनमोल वचन शिक्षाप्रद लगते हैं।

हम ईश्वर से यही प्रार्थना करेंगे कि हँसती दुनिया दिन-दुगुनी और रात चौगुनी तरक्की करे।

– परमिन्दर सिंह (लुधियाना)

मैं हँसती दुनिया की नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत ही अच्छी लगती है। हर माह मैं हँसती दुनिया के आने का इन्तजार करती रहती हूँ।

मुझे हँसती दुनिया पत्रिका बहुत प्रिय है।

मुझे हँसती दुनिया में 'चित्रकथाएं' तथा 'पढ़ो और हँसो' बहुत अच्छे लगते हैं।

मैं और मेरा भाई इसे मिल-बैठकर पढ़ते हैं। हमें इससे बहुत ज्ञान प्राप्त हुआ। **– आध्या झा**

मैं हँसती दुनिया को नियमित पढ़ता हूँ और मैं इससे बहुत सारी अच्छी बातें सीखता हूँ। मुझे 'पढ़ो और हँसो' अच्छा लगता है। मैं हँसती दुनिया की कहानियां खुद भी पढ़ता हूँ और अपने भाई-बहन तथा मित्रों को भी सुनाता हूँ। **– पवन (मुंबई)**

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

सन्त निरंकारी मण्डल द्वारा नियमित रूप में प्रकाशित होने वाली

पत्र-पत्रिकाएं

सन्त निरंकारी

❖ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली **'सन्त निरंकारी'** विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें सत्गुरु वचनामृत एवं अनुभवी लेखकों की तर्कपूर्ण रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं।

एक नज़र

❖ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र **'एक नज़र'** में सत्गुरु माता जी के दिव्य वचन एवं मिशन की गतिविधियों के समाचार प्रकाशित होते हैं।

हँसती दुनिया

❖ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक **'हँसती दुनिया'** में रोचक कहानियां, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं एवं चित्रकथाएं समाहित होते हैं।

उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता हेतु सम्पर्क करें : -

Tel. : 011-47660200 (Extn. : 862)
Email : patrika@nirankari.org

पाठकों के लिए सूचना ...

❖ क्या आपको हँसती दुनिया (हिन्दी) मासिक निरन्तर मिल रही है?

❖ पत्रिका विभाग द्वारा हर माह 22 तारीख को पत्रिका Dispatch (प्रेषित) कर दी जाती है। यदि एक सप्ताह तक भी आपको प्राप्त न हो तो कृपया–

1. अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करें।
2. पत्रिका विभाग को फोन नं. 011-47660200 अथवा Help Line 011-47660360 पर सूचित करें ताकि आपको उसकी दूसरी प्रति भिजवाई जा सके।

पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कॉम्पलेक्स, बुराड़ी रोड़, दिल्ली-110009

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सत्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें।